इकाई - 7

गृह प्रबन्ध

7.1 बजट (Budget)

7.1.1 बजट का अर्थ (Meaning of Budget)

7.1.2 बजट की परिभाषा (Definition of Budget)

7.1.3 बजट का महत्व (Importance of Budget)

7.1.4 बजट के प्रकार (Types of Budget)

7.1.5 पारिवारिक बजट में व्यय की प्रमुख मदें (Chief Items of family Budget)

7.1.6 पारिवारिक बजट को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing Family Budget)

7.2 बचत (Saving)

7.2.1 बचत का अर्थ (Meaning of saving)

7.2.2 परिभाषा (Definition)

7.2.3 बचत का महत्व (Importance of saving)

7.2.4 बचत को निर्धारित करने वाले तत्व (Factors determining saving)

7.2.5 बचत से लाभ (Advantages of saving)

7.2.6 विनियोग के प्रकार (Types of Investment)

7.3 समय एवं शक्ति-बचत उपकरण (Time and Energy Saving Equipments)

7.3.1 गैस से संबद्ध समय-शक्ति बचत उपकरण, जैसे- गैस-चूल्हा, भोजन पकाने का रेंज

7.3.2 बिजली से संचालित समय-शक्ति बचत उपकरण, जैसे- रेफ्रीजरेटर, विद्युत-स्टोव, टोस्टर, कॉफी, परकोलेटर, बिजली की केतली, मिक्सर तथा ग्राइंडर, बर्त्तन धोने की विद्युत मशीन, कपड़े धोने की मशीन, विद्युत इस्त्री, वैक्यूम क्लीनर।

7.3.3 अन्यान्य समय-शक्ति बचत उपकरण, जैसे-प्रेशर कुकर, सिलाई मशीन

7.3.4 घरेलू उपकरणों के चयन में सावधानी (Care in selection of Household Equipments)

7.4 रसोईगृह-उद्यान (Kitchen Garden)

7.4.1 रसोई गृह - उद्यान का अर्थ।

7.4.2 रसोई गृह - उद्यान की परिभाषा।

7.4.3 रसोई गृह - उद्यान के उद्देश्य

7.4.4 रसोई गृह - उद्यान की योजना :- उपकरण, मिट्टी, देख-रेख, बीज तथा पौधों का प्रसार, बीजों से पौधे उगाना।

7.4.5 विधियाँ।

7.4.6 बाग की जमीन :- लॉन, घेरा अधोलता, झाड़ी, क्यारियाँ, किनारी।

7.4.7 पात्र में बागवानी घर के भीतर वाले पौधे।

7.4.8 खाद।

7.4.9 सजावटी पौधे गंधयुक्त फूल।

7.4.10 महीनों के अनुसार / मौसमानुकूल बागवानी का कार्यक्रम।

7.4.11 बोंसाई :- बोंसाई बनाने की विधियाँ, बोंसाई गमले।

7.4.12 रसोईगृह - बाग से लाभ।

7.1 बजट (Budget)

7.1.1 बजट का अर्थ (Meaning of Budget)

अपने आस-पड़ोस या समाज में हमें प्रायः यह देखने को मिलता है कि समान्य पारिवारिक आय एवं परिस्थितियाँ होने के बावजूद दो परिवारों में से एक के रहन-सहन का स्तर दूसरे की तुलना में ऊँचा होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि रहन-सहन के उच्च स्तर वाले परिवार में पारिवारिक संसाधनों विशेषकर पारिवारिक आय, का विवेकपूर्ण उपयोग होता है। दूसरी ओर, रहन-सहन के निम्न स्तर वाले परिवार में पारिवारिक संसाधनों का उपयोग अव्यवस्थित रूप से होता है। समस्त उपलब्ध पारिवारिक संसाधनों का उपयोग करना तथा आय को आवश्यकताओं के अनुरूप लेखा-जोखा बनाकर व्यय करना समग्र पारिवारिक विकास के लिए आवश्यक है। बजट बनाकर घर चलाने का अर्थ आय को आवश्यकताओं के अनुरूप लेखा-जोखा बनाकर व्यवस्थित रूप से व्यय करना है। आय को इस प्रकार व्यय करने से सर्वाधिक संतुष्टि प्राप्त होती है।

इन्हें भी जाने: बजट फ्रांसीसी शब्द 'ब्यूजेट' (Bougette) से बना है जिसका अर्थ 'चमड़े का छोटा थैला' होता है।

7.1.2 बजट की परिभाषा (Definition of Budget)

प्रो० शिराज के अनुसार, "बजट आय और व्यय का विवरण है जो अनुमानित व्यय को पूरा करने के लिए तैयार किया जाता है।"

वर्गीज, ओगेज एवं श्रीनिवासन के अनुसार, "बजट एक दी हुई आय में एक निश्चित अवधि, जैसे-एक सप्ताह, एक महीना या एक वर्ष में व्यय एवं बचत करने की योजना है।"

ऐने स्टौर्स के अनुसार, "किसी निश्चित अवधि में होनेवाली निश्चित आय को उस निश्चित अवधि में योजनाबद्ध ढंग से व्यय करने के लिए तैयार किया गया प्रपत्र या लेखा-जोखा है।

टेलर के अनुसार, "बजट वित्तीय योजना है। यह अगामी आय का अनुमान प्रस्तावित व्ययों के अनुमान साथ-साथ करता है।"

7.1.3 बजट का महत्व (Importance of Budget)

वर्तमान काल में बजट का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह परिवार का वित्तीय केन्द-बिन्दु होता है। इसकी सहायता से परिवार की आर्थिक प्रगति का सही-सही मूल्यांकन किया जा सकता है। बजट का महत्व निम्नांकित विवरण से स्पष्ट हो जाएगा।

(क) बजट बनाने की प्रक्रिया में अनिवार्य, योग्यता संबंधी एवं विलासिता-संबंधी आवश्यकताओं का ज्ञान हो जाता है।

(ख) बजट बनाकर व्यय करने से आय के अनुरूप व्यय करने की प्रक्रिया पर व्ययकर्त्ता का नियंत्रण रहता है।

(ग) बजट अनियमित आय तथा नियमित व्यय के मध्य संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण सहयोग देता है।

(घ) बजट दूरगामी एवं लघुअवधिक (Long term and short term) लक्ष्यों को निर्धारित करने में योगदान करता है।

(ङ) अलाभप्रद एवं अनावश्यक व्यय को पहचान कर उनपर रोक लगाने में बजट से सहायता मिलती है।

(च) बजट जीवन की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने में भी सहायता करता है।

(छ) यह बचत करने की प्रवृति को विकसित करता है।

(ज) बजट जीवन - दर्शन, व्यक्तित्व, प्रवृत्तियों, अभिरुचियों और सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक नीतियों तथा प्राथमिकताओं का परिचायक होता है।

(झ) इससे किसी एक संसाधन के अभाव में अन्य संसाधनों से सहायता लेने में मदद मिलती है।

(ञ) बजट के द्वारा परिवार की कुशलता में वृद्धि की जा सकती है, बजट विभिन्न कार्यक्षेत्र को निर्धारित कर देता है।

निष्कर्ष - उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि बजट आर्थिक प्रगति का आधार तो है ही यह सामाजिक प्रगति का भी आधार बन गया है। बजट आय-व्यय की क्रियाओं का निर्देशन करके परिवार के कार्य को सुचारु रूप से चलाता है। बजट के माध्यम से आर्थिक स्थिरता तथा आर्थिक नियंत्रण को प्राप्त किया जा सकता है। बजट का उपयोग पूर्ण रोजगार की स्थापना करने के लिए भी किया जाता है।

इन्हें भी जानें : बजट के द्वारा समाज सुधारक यह पता लगा लेते हैं कि जनता में किस प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति या किस प्रकर की वस्तुओं की आदत पड़ रही है। आवश्यक व्यय तो नहीं हो रहा है। वे बजट के अध्ययन के पश्चात् सामाजिक नीतियों और दशाओं को सुधारने का प्रयास करते हैं।

7.1.4 बजट के प्रकार (types of Budget)

बजट के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं, जैसे -

(क) अवधि के आधार पर

(I) दैनिक बजट (Daily Budget) दैनिक पारिश्रमिक पानेवाले लोगों (Dialy wage earners) अभिभावकों से पॉकेट खर्च (Pocket money) पानेवाले छात्र-छात्राओं आदि द्वारा प्रायः दैनिक बजट बनाया जाता है।

(ii) साप्ताहिक बजट (Weekly Budget) हफ्तावार या साप्ताहिक पारिश्रमिक पानेवालों द्वारा साप्ताहिक बजट बनाया जाता है। आमतौर पर बड़े-बड़े ठीकेदारों द्वारा अपने श्रमिकों को हफ्तावार भुगतान किया जाता है ऐसे श्रमिकों द्वारा सामान्यतः साप्ताहिक बजट बनाया जाता है।

(iii) पाक्षिक बजट (Bi-weekly Budget) कहीं-कहीं जैसे रेलवे में तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग तथा कैजुअल कर्मचारियों के बीच, पंद्रह दिनों पर वेतन भुगतान होता है। इस प्रकार का वेतन भुगतान पानेवाले आमतौर पर पाक्षिय बजट बनाते हैं।

(iv) मासिक बजट (Monthly Budget) व्यक्तियों या परिवारों द्वारा बनाए जानेवाले विभिन्न प्रकार के बजटों में यह सर्वाधिक प्रचलित प्रकार है। आमतौर पर वेतन का मासिक भुगतान करने (monthly payment of salary) का ही सर्वाधिक प्रचलन है। मासिक वेतन पानेवालों के लिए मासिक बजट बनाना ही सर्वाधिक उपयुक्त रहता है।

(v) वार्षिक बजट (Annual Budget) संस्थानों और सरकारों द्वारा वार्षिक बजट बनाए जाते हैं।

(ख)संस्थागत आधार पर

बजट वैयक्तिक, पारिवारिक, किसी स्थानीय प्रांतीय राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय आदि संस्था या समिति का अथवा प्रांतीय या राष्ट्रीय सरकारों का हो सकता है।

बजट निजी, संस्थागत, सरकारी अथवा गैर सरकारी हो सकता है। यह स्वैच्छिक (Voluntary) अथवा बंधनकारी (binding) हो सकता है। यह लिखित (Writing) हो सकता है। जैसे, सभी सरकारी बजट लिखित एवं बंधनकारी होते हैं। यह मानसिक (Mental) या अलिखित हो सकता है, जैसे बहुत से व्यक्तियों के निजी बजट अलिखित होते हैं।

(ग) पारिवारिक बजट

(i) संतुलित बजट (Balanced Budget) ऐसे बजट में परिवार की अनुमानित मासिक आय और उसके मासिक प्रस्तावित व्यय बराबर होते हैं। इसमें न तो काई बचत, होती है और न ही उधार लेने की जरूरत दिखाई देती है। ऐसा बजट परिवार के लिए अच्छा समझा जाता है। लेकिन, इसमें एक बड़ा दोष रह जाता है कि मासिक बचत नहीं रखने से भविष्य में परिवार में संकट उपस्थित हो जाने पर उसका सामना करने में काफी कठिनाई होती है।

(ii) लाभ का बजट (Surplus Budget) ऐसे बजट में मासिक पारिवारिक अनुमानित आय की अपेक्षा पारिवारिक प्रस्तावित व्यय कम होता है, अर्थात् परिवार की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाने के बाद भी कुछ रकम बचत के रूप में दिखाई जाती है।

(iii) घाटे का बजट (Deficit Budget) ऐसे बजट में परिवार की अनुमानित मासिक परिवार के प्रस्तावित व्यय से कम होती है ऐसे बजट की स्थिति में दूसरों से उधार लेने या संचित धन से कुछ राशि निकालकर खर्च करने की आवश्यकता पड़ जाती है।

इन्हें भी जानें - पारिवारिक बजट सदा संतुलित बजट ही होना चाहिए। संतुलित बजट में बचत एवं आपत्कालीन व्यय के लिए सुरक्षित निधि एवं कुल व्यय का योगफल कुल आय के योगफल के बराबर होता है।

7.1.5 पारिवारिक बजट में व्यय की प्रमुख मदें (Chief Items of family Budget)

प्रत्येक परिवार का बजट उसकी आय एवं आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। परन्तु व्यय-मदों में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। प्रत्येक परिवार के बजट के अन्तर्गत अग्रलिखित व्यय सम्मिलित होते हैं।

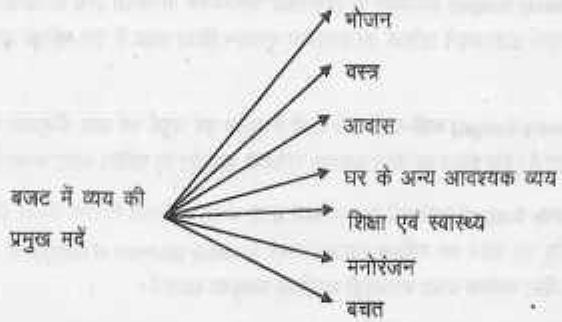

1. **भोजन :** यह बजट की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मद है। किसी भी स्तर का परिवार क्यों न हों, उसकी कुल आय का सबसे बड़ा प्रतिशत भोजन पर ही व्ययय होता है, क्योंकि भोजन मनुष्य की सर्वप्रथम मूल आवश्यकता है। पौष्टिक भोजन ही परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य का आधार है। इस मद पर अत्यधिक विवेकपूर्ण ढंग से व्यय करने की आवश्यकता होती है। कुशल गृहिणी सीमित आय से पुष्ट एवं सन्तुलित भोजन प्रदान करने की व्यवस्था करती है। इस मद के अन्तर्गत वह सभी धन सम्मिलित होता है जो परिवार के लिए आवश्यक भोजन-सामग्री क्रय करने हेतु व्यय किया जाता है।

2. **वस्त्र :** व्यय की दूसरी महत्वपूर्ण मद वस्त्र है। स्त्री-पुरुषों और बच्चों के पहनने के वस्त्रों पर व्यय होता है। इसके अतिरिक्त ओढ़ने-बिछाने, तकिए, पर्दे आदि के लिए जिन वस्त्रों की आवश्यकता होती है, उन पर किया गया व्यय तथा वस्त्रों की सिलाई का व्यय इसी के अन्तर्गत सम्मिलित है। परिवार की आय के अनुसार साधारण, मोटे, और सस्ते अथवा अच्छी किस्म के महँगे वस्त्र क्रय किए जाने चाहिये।

3. **आवास :** प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का कुछ भाग मकान के लिए व्यय करना होता है। शहरों में अधिकांश लोग किराये के मकानों में रहते हैं। वे किराये के रूप में मकान पर धन व्यय करते हैं परन्तु जिन व्यक्तियों के पास अपने स्वयं के मकान हैं, उन्हें भवन-कर तथा समय-समय पर मरम्मत के लिए व्यय करना पड़ता है।

4. **धन के अन्य व्यय :** इसके अन्तर्गत बिजली या प्रकाश पर किया गया व्यय, धोबी, नौकर, घर की सजावट, फर्नीचर, बर्तनों की मरम्मत, घर की सफाई आदि पर किये गये व्यय सम्मिलित हैं।। कुछ परिवारों में भोजन बनाने एवं अन्य घरेलू कार्यों हेतु बिजली के यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। इन पर किया गया व्यय भी इस मद में डाला जाता है।

5. **शिक्षा एवं स्वास्थ्य :** यह व्यय की महत्वपूर्ण मद है। बच्चों के लिए उचित शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना परिवार का एक महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। बच्चों की पुस्तकों, कापियों, विद्यालय का शुल्क, पत्र-पत्रिकाओं तथा लेखन-सामग्री पर किया गया व्यय इस मद के अन्तर्गत आता है। इसके अतिरिक्त परिवार के सदस्यों के बीमार होने पर उनकी चिकित्सा पर किया गया व्यय भी इसमें सम्मिलित है।

6. **मनोरंजन आदि :** मनोरंजन का मनुष्य जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक परिवार वयस्कों पर तथा कुछ धन अवश्य ही व्यय करता है। इसके अन्तर्गत बच्चों के लिए खेलने की वस्तुओं को खरीदने पर किया गया व्यय, पिकनिक, क्लबों मनोरंजनात्मक भ्रमण पर व्यय, नाटक, सिनेमा आदि पर व्यय सम्मिलित होते हैं।

7. **बचत :** बच्चों की शिक्षा, विवाह, बीमारी तथा आकस्मिक खर्चों के लिए आय का एक निश्चित प्रतिशत प्रति माह प्रत्येक व्यक्ति को बचाना नितान्त आवश्यक है। परिवार की मासिक आय में से दैनिक व्यय निकालने के पश्चात् जो बचता है उसे बचत कहते हैं।

इन्हें भी जानें - जैसे-जैसे आय बढ़ती है - भोजन पर व्यय का प्रतिशत घटता है तथा अन्य आरामदेह वस्तुओं पर व्यय का प्रतिशत बढ़ता जाता है।

7.1.6 पारिवारिक बजट को प्रभावित करने वाले कारक (Factors influencing family Budget)

पारिवारिक बजट को प्रभावित करने वाले कारकों में से कुछ प्रमुख अग्रलिखित हैं -

पारिवारिक बजट को प्रभावित करने वाले कारक

- पारिवारिक आय
- परिवार में सदस्यों की संख्या एवं आयुवर्ग
- पारिवारिक जीवन - चक्र
- नौकरी - पेशा
- स्थान या परिवेश
- जीवन - दर्शन।

(क) पारिवारिक आय : पारिवारिक व्यय के किस मद पर कितनी रकम निर्धारित की जाए यह पारिवारिक आय पर निर्भर करता है। निम्न आय-वर्गीय परिवारों में पारिवारिक आय का बड़ा हिस्सा, लगभग सात प्रतिशत तक, भोजन पर व्यय होता है। उच्च वर्गीय परिवारों में भोजन पर कम, लगभग तीन प्रतिशत तथा सुख- सुविधा एवं विलासिता पर बहुत अधिक व्यय किया जाता है।

(ख) परिवार में सदस्यों की संख्या एवं आयुवर्ग : पारिवारिक बजट में किस मद के लिए कितनी रकम निर्धारित की जाएगी यह परिवार के सदस्यों की संख्या एवं उनके आयुवर्ग पर भी आधारित होता है जिस परिवार में पाँच से पच्चीस वर्ष के आयुवर्ग वाले सदस्यों की संख्या अधिक होती है उस परिवार के पारिवारिक बजट में पारिवारिक आय का एक बड़ा अंश शिक्षा के मद पर खर्च होता है क्योंकि सामान्यतया पाँच से पच्चीस वर्ष के आयुवर्ग में छात्र-छात्राएँ अधिक होती हैं। इसी प्रकार जिस परिवार में पचास वर्ष से ऊपर के आयुवर्ग के सदस्यों की संख्या अधिक होती है। उस परिवार में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा पर अधिक व्यय होता है। एक बच्चे पर औसत व्यय एक वयस्क पर औसत व्यय की तुलना में सामान्यत: लगभग आधा होता है। अत: जिस परिवार में बच्चों की अपेक्षा वयस्कों की संख्या अधिक होती है उसमें पारिवारिक व्यय अधिक होता है।

(ग) पारिवारिक जीवन-चक्र : पारिवारिक जीवन चक्र (Family life cycle) की विभिन्न अवस्थाएँ पारिवारिक बजट को बहुत हद तक प्रभावित करती हैं। पारिवारिक जीवन-चक्र की प्रारंभिक या प्रथम अवस्था तब प्रारंभ होती है जब एक युवती एवं युवक परिणय - सूत्र में बँधकर दंपति बनते हैं तथा घर बसाते हैं। इस अवस्था में पारिवारिक बजट कम होता है, तथा पारिवारिक आय का अधिकांश हिस्सा वैवाहिक जीवन की सुख सुविधाओं का उपभोग करने पर व्यय होता है। पारिवारिक जीवन-चक्र की दूसरी अवस्था विस्तार की अवस्था (Expanding period) होती है। पारिवारिक आय का अधिकांश संतान के पालन-पोषण एवं शिक्षा-दीक्षा पर व्यय होता है। यह पारिवारिक जीवन-चक्र का सर्वाधिक खर्च वाला भाग होता है। पारिवारिक जीवन-चक्र की तीसरी अवस्था

में बेटी-बेटे अपना अलग परिवार बसाकर स्वतंत्र हो जाते हैं और पत्नी तथा पति अकेले बच जाते हैं। इस अवस्था में पारिवारिक व्यय कम हो जाता है।

(घ) नौकरी-पेशा : परिवार के सदस्यों के व्यवसायों का भी पारिवारिक बजट पर बहुत हद तक प्रभाव पड़ता है। कुछ विशेष सेवा-संवर्गों में आवास, यातायात, टेलीफोन, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा, चिकित्सा आदि सेवाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती हैं।

(ङ) स्थान या परिवेश : पास-पड़ोस तथा स्थान का प्रभाव पारिवारिक बजट पर पड़ता है। समान पारिवारिक आय एवं परिस्थितियों वाले दो परिवारों में से गाँव में रहनेवाले परिवार में शहर में रहनेवाले परिवार की तुलना में कम व्यय होगा।

(च) जीवन दर्शन : परिवार के मुखिया का जीवन दर्शन उसके पारिवारिक बजट को प्रभावित करता है। कुछ व्यक्ति 'सादा जीवन' उच्च विचार में विश्वास रखते हैं। कुछ व्यक्ति तड़क-झड़क तथा आत्मप्रदर्शन में विश्वास रखते हैं।

इन्हें भी जानें - पारिवारिक व्यय का विस्तृत हिसाब रखने से आगामी माह का पारिवारिक बजट बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग मिलता है।

7.2 बचत (Saving)

7.2.1 बचत का अर्थ (Meaning of saving)

साधारण भाषा में बचत हम उस धनराशि को कहते हैं जिसे हम अपनी आय से आवश्यक खर्चों को पूरा करने के बाद बचाते हैं। 'बचत' का अर्थ उस धन से है जिसे हम किसी ऐसी योजना में विनियोजित करते हैं जहाँ वह धन उत्पादक कार्यों में लगता है और एक निश्चित समय के बाद जब वह धन पुनः प्राप्त होता है तो विनियोजित धनराशि, लाभांश सहित अतिरिक्त धन के रूप में प्राप्त होती है। प्रायः यह धनराशि हम अपनी आवश्यक आवश्यकताओं के खर्चों से कटौती करके विनियोजित करते हैं जिससे हमारी भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यह धन अतिरिक्त धन के रूप में प्राप्त हो सकें।

अतः "बचत" वह धन है जो उत्पादक कार्यों में विनियोजित किया जायें और निश्चित समयोपरान्त बढ़ी हुई धनराशि के रूप में प्राप्त हो।

सामान्य अर्थ में कुल आय में से व्यय को घटा देने से जो कुछ धन शेष बचता है उसे बचत कहते हैं।

7.2.2 परिभाषा (Definition)

वर्मा एवं देशपांडे के अनुसार, "बचत मनुष्य की आय का वह भाग है जो वर्त्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयोग नहीं किया जाता है और सम्पत्ति की पूँजी का रूप दिया जाता है।"

केन्ज जे० एम० के अनुसार, "वर्त्तमान आय का वर्त्तमान उपयोग व्यय पर आधिक्य को बचत कहा जाता है।"

डॉ० जी० पी० शैरी के अनुसार, "बचत वह धन राशि कहलाती है, जो भावी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बचाकर रखी जाए तथा उसका विनियोग उत्पादन कार्यों में किया जाए।

बर्गीज, ओगेल एवं श्रीनिवासन के अनुसार, "भविष्य में खर्च करने के उद्देश्य से वर्तमान व्यय में कटौती करने के फलस्वरूप संचित धनराशि को बचत कह सकते हैं।

इस प्रकार, उपरोक्त परिभाषा के आधार पर, बचत को इस तरह परिभाषित किया जा सकता है कि इस प्रक्रिया के अंतर्गत वर्तमान आय की तुलना में व्यय कुछ कम किया जाता है। इससे जितने रुपये की बचत होती है उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखा जाता है।

इन्हें भी जानें - व्यक्ति अपनी बचत को सीधे ऋण के रूप में दूसरों को दे सकता है या बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं में जमा कर सकते हैं। इस जमा (Deposit) पर उन्हें ब्याज (Interest) भी मिलता है।

7.2.3 बचत का महत्त्व (Importance of Saving)

परिवार के जीवन-स्तर में बचत एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक परिवार के लिए बचत के महत्व को निम्नलिखित प्रकार से समझा जा सकता है।

1. बचत परिवार को आर्थिक रूप से अधिक आत्मविश्वासी बनाती हैं तथा उसे हिम्मत से भविष्य का सामना करने योग्य बनाता है।

   बचत भविष्य की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए वर्त्तमान आय से कुछ भाग प्रदान करना होता है जिन आवश्यकताओं को अकेले भविष्य की आय अथवा आय में गिरावट के समय पूरा करना असम्भव होगा।

2. बचत आय तथा व्यय के मध्य सन्तुलन लाने में सहायता करती है। एक परिवार के लिए भविष्य की बचत के रूप में निश्चित धनराशि अलग रखे बिना एक दिन भी रहना कठिन होता है।

3. बचत पारिवारिक जीवन - चक्र के विभिन्न स्तरों पर धन की असमानताओं में सहायता करती हैं। पारिवारिक जीवन चक्र में निरन्तर उतार चढ़ाव आते हैं। ये परिवार के लिए सलाह देने योग्य है कि प्रारम्भिक स्तरों के दौरान जब उपभोग कम होता है बचत करें। आय का यह भाग व्यय स्तरों के दौरान जब आय वृद्धि की माँग होती है ये सदुपयोगी हो सकता है।

4 बचत धन खर्च के लिए हमें रीतिबद्ध पद्धति विकसित करने में सहायता करती है। एक व्यक्ति सचेत धन प्रबन्धन निर्णय ले सकता है यदि उसके मस्तिष्क में बचत योजनाएँ हैं।

5 धन बचाना अधिक धन प्राप्त करने में सहायक होता है। लोग बचे हुए धन को व्यवसाय में, सम्पत्ति खरीदने में, शेयर अथवा ऋणपत्र जो धन वृद्धि के लिए उपलब्ध हो, में नियोजित करते हैं। जब संचित धन विनियोग किया जाता है तो यह ब्याज, लाभांश इत्यादि के रूप में अतिरिक्त आय लाता है।

6 बचत अनदेखी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होती है। भविष्य अनजान तथा असुरक्षित होता है। कोई नहीं जानता कि भविष्य में क्या होगा? बचा हुआ धन भविष्य के आपातकालों, असुरक्षा के दिनों में प्रयोग किया जा सकता है।

7 बचत घर तथा वाहन अथवा परिवार के लिए अन्य सम्पति खरीदकर जीवन-स्तर में सुधार लाने में सहायक होते हैं।

8 बचत समाज में परिवार को मान-मूल्य प्रदान करता हैं। यदि एक व्यक्ति के पास बड़ा बैंक बैलेन्स होता है तो वह उच्च स्तर का आनन्द उठाता है।

9 बचत व्यवसाय चक्र द्वारा आयी असमानताओं का सामना करने में सहायता करती है। व्यवसाय चक्र में परिवर्तनों के कारण आर्थिक व्यवस्था में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। व्यक्ति को मुद्रा संकुचन के दौरान जब कीमतें निम्न हों, बचत करनी चाहिए। महँगाई के समय जब कीमते उच्च होती हैं, तब इस बचत को प्रयोग में लाया जा सकता है।

10 बचत राष्ट्र प्रगति में उच्च-स्तर की सहायता करती हैं। व्यक्ति धन बचाते हैं तथा उन संस्थाओं में विनियोग करते हैं जो व्यावसायिक व्यक्तियों को ऋण देती हैं तथा ब्याज के साथ लौटाती है। यह अर्थव्यवस्था में वृद्धि के परिणाम के रूप में होता है।

7.2.4 बचत को निर्धारित करने वाले तत्व (Factors defining saving)

किसी भी परिवार की बचत को निर्धारित करने में निम्नलिखित तीन प्रमुख तत्वों का योग होता है -

बचत को निर्धारित करने वाले तत्व
- → बचत करने की योग्यता
- → बचत करने की इच्छा
- → बचत करने की पर्याप्त सुविधाएँ

1. बचत करने की योग्यता - (Abilities to save)

व्यय से अधिक आय होने पर ही बचत होती है। इसलिए आय-व्यय से अधिक होना अनिवार्य है। आय बढ़ने से एवं आवश्यक सामानों के दामों पर नियंत्रण रहने से लोगों में स्वतः बचत करने की रुचि जाग्रत होती है। पूर्व निर्धारित बजट के अनुसार नियंत्रित व्यय करने की योग्यता बचत को प्रोत्साहन देती है।

2. बचत करने की इच्छा (Desire to save)

इच्छाओं से ही किसी कार्य को करने की प्रेरणा मिलती है। धन व्यय करने में इच्छाओं का प्रमुख हाथ रहता है। बचत करने की इच्छा रहने पर ही मनुष्य बचत करता है।

बचत करने की इच्छा पारिवारिक स्नेह, दूरदर्शिता, समाज में प्रतिष्ठा, स्वभाव, परोपकार आदि बातों पर निर्भर करता है। जो व्यक्ति परिवार को सुखी-सम्पन्न देखना चाहते हैं। वे बचत पर विशेष ध्यान देते हैं। भविष्य में होनेवाली आकस्मिक घटनाओं, शादी, जनेऊ आदि दीर्घकालीन उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए भी लोग बचत करते हैं। भविष्य में होनेवाली कठिनाइयों से अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए वे ऐसा करते हैं। समाज में अपने आप को संपन्न दिखाने के लिए एवं अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए भी व्यक्ति बचत करता है।

जब तक मनुष्य में बचत करने की प्रबल इच्छा नहीं होगी वह बचत नहीं कर पाएगा।

3. बचत करने की पर्याप्त सुविधाएँ (Opportunities to save)

देश में शांति एवं सुरक्षा, विनियोग के साधन, सुदृढ़ मुद्रा-प्रणाली, प्राकृतिक स्थिति आदि बचत की सुविधाओं के अन्तर्गत आती है। पर्याप्त सुविधाओं के रहने पर ही बचत करने की लोगों को प्रेरणा मिलती है।

बचत के लिए देश में अनुकूल वातावरण (शांति एवं सुरक्षा) का होना अनिवार्य है। यदि देश में अशांति रहेगी, लड़ाई, चोरी, डकैती आदि होती रहेगी तब लोगों में बचत की प्रवृत्ति नहीं होगी। बढ़ती महँगाई बचत में सबसे अधिक बाधक होती है।

बचाई गई धनराशि के विनियोग के लिए बैंक, पोस्ट आफिस, बीमा कम्पनी औद्योगिक प्रतिष्ठान रहना भी अनिवार्य है। बचत राशि का उचित और सुरक्षित विनियोग का स्थान होना चाहिए ताकि विनियोगकर्त्ता उसकी रक्षा की चिन्ता से मुक्त रहे। यदि देश का

उद्योग कुशल एवं योग्य व्यक्तियों के हाथ में रहता है तब ऐसे संस्थानों के शेयर, ऋणपत्र आदि में धन लगाया जा सकता है और नफा के रूप में धन प्राप्त किया जा सकता है। इससे लोगों के बचत के लिए प्रोत्साहन मिलता है। देश में सुदृढ़ मुद्राप्रणाली भी बचत को प्रोत्साहन देती है। मुद्रा के मूल्य में अधिक उतार चढ़ाव होने से लोगों का विश्वास देश की मुद्रा पर से हट जाता है और लोग बनाई हुई धनराशि का सरकारी एवं अन्य स्थानों पर विनियोग करने में संकोच करने लगते हैं। जिस देश में बार-बार भूकम्प, बाढ़, महामारी आदि आती रहती है वहाँ के लोग अपने आपको असुरक्षित अनुभव करते है। अपने भविष्य को अंधकारमय समझते है अतः उनमें बचत की प्रवृति नहीं होती है।

उपर्युक्त तत्वों के रहने पर ही व्यक्ति बचत कर सकता है। उपर्युक्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नियमित रूप से धन बचाना अत्यंत आवश्यक है। धन बचाने के साथ-साथ उसे सुरक्षित रखना भी आवश्यक है। बचाए धन को ऐसे काम में लगाना चाहिए, जिससे कुछ आय भी हो तथा धन सुरक्षित भी रहे।

7.2.5 बचत से लाभ (Advantages of Saving)

बचत करना एक अत्यधिक लाभदायक क्रिया है। बचत द्वारा एकत्र की गई संपत्ति का जीवन में कभी-भी लाभप्रद उपयोग किया जा सकता है।

बचत के विभिन्न लाभों में कुछ प्रमुख निम्नलिखित हैं -

(क) भविष्य में आवश्यकताओं की पूर्ति (Fulfilment of future Necessities)

जीवन मे कब किस चीज की आवश्यकता पड़ जाए यह नहीं कहा जा सकता, उदाहरनार्थ बेटी का विवाह, बेटे का उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए विदेश जाना, उसके द्वारा अपना व्यापार प्रारम्भ करना, कोई आकस्मिक दुर्घटना आदि जैसे अवसरों पर एक साथ काफी रुपयों की आवश्यकता पड़ सकती है। इसी प्रकार अपनी रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाने के उद्देश्य से नया मकान बनवाने, नई गाड़ी खरीदने आदि के लिए भी बड़ी मात्रा में धन की आवश्यकता पड़ सकती है। इन सबके लिए पहले की जा चुकी बचत की राशि सहायक होती है।

(ख) वृद्धावस्था में आर्थिक संरक्षण (Economic Security During old Age)

भारत में सामान्यतः नौकरी से अवकाश ग्रहण करने की आयु लगभग अट्ठावन से बासठ वर्ष के बीच होती है। लगभग इसी अवस्था में परिवार सिकुड़न की अवस्था में (Period of contraction) से गुजरता है। पुत्र-पुत्रियाँ अपने पैरों पर खड़ा होकर अपना घर बना चुकी होती है। वृद्ध पति एवं पत्नी लगभग अकेले ही बच जाते हैं। वृद्धावस्था में शरीर की देखभाल करने की आवश्यकता युवावस्था की तुलना में अधिक होती है। अतः स्वास्थ्य एवं चिकित्सा पर अधिक व्यय करना अपेक्षित होता है। इस परिस्थिति में पहले का बचाया हुआ पैसा बहुत काम आता है। अपने पास बचत का पैसा होने से दूसरों पर निर्भर नहीं होना पड़ता है।

(ग) आपातकाल में आर्थिक सुरक्षा (Economic Security During Emergency)

जीवन में अनेकों बार मनुष्य को आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पड़ सकता है। किसी कारणवश नौकरी अचानक छूट जा सकती है अथवा नौकरी से अवकाश ग्रहण करना पड़ सकता है। व्यापार में घाटा हो सकता है। दिवालिया हो जाने पर दूकान या व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद कर देना पड सकता है, परिवार के लिए पैसा कमाने वाले सदस्य की मृत्यु हो जा सकती है अथवा वह किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त होकर लंबी अवधि तक बिछावन पर पड़ा रह सकता है। इन परिस्थितियों में व्यक्ति और उसके परिवार को गंभीर आर्थिक संकट से गुजरना पड़ता है। इस माहौल में पहले किया गया बचत ही एकमात्र आधार होता है। अगर

यह बचत न हो तब उसे ऋण लेना पड़ सकता है। ऋण प्रायः कठिनाई से ही उपलब्ध हो पाता है। इस प्रकार बचत आर्थिक अस्थिरता अथवा संकट की अवधि में महत्वपूर्ण संरक्षण उपलब्ध कराती है।

(घ) अनुपूरक आय का साधन (Means of supplementary income)

बचत की राशि को विभिन्न प्रकार की लाभप्रद योजनाओं, जैसे जीवन बीमा, यूनिट ट्रस्ट, इंदिरा विकास पत्र, डाकघर बीमा योजना, राष्ट्रीय बचत योजना तथा विभिन्न कंपनियों के शेयर आदि में निवेशित कर एक स्थायी अनुपूरक आय का स्त्रोत बनाया जा सकता है।

(ङ) सामाजिक - आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाना (Raising Socio-economic status)

बचत से प्राप्त धनराशि की सहायता से गृहस्वामी अपने परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्तर को ऊँचा उठा सकता है।

(च) मनोवैज्ञानिक निश्चिंतता (Psychological Stability)

अपने पास में पैसा रहने से व्यक्ति को एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक निश्चिंतता रहती है। उसका हौसला बुलंद रहता है। वह किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहता है। इसके विपरीत पैसे के अभाव में व्यक्ति एक प्रकार की हीनता-ग्रंथि (Inferiority Complex) से ग्रस्त रहता है।

(छ) रहन-सहन का स्तर बनाए रखना (Maintaining Standard of Living)

मौसमी आय (Seasonal income) अर्जित करनेवाला, जैसे-खेतिहर मजदूर आदि, बचत के पैसे से अपने रहन-सहन के सामान्य स्तर को बनाए रख सकता है।

इन्हें भी जानें - कुशल गृहिणियाँ परिवार की मुख्य आवश्यकताओं की पूर्ति करती हुई घर के खर्च में निम्न प्रकार से कमी कर सकती हैं - महँगी चीजों के बदले सस्ती मजबूत चीजें खरीदकर, उपज के मौसम में सस्ते अनाजों को थोक खरीदकर, अनाज, फलों, साग सब्जियों को सुरक्षित रखकर, सहज सुलभ चीजों का प्रयोग कर, खाना पकाने में ईंधनों की बचत कर इत्यादि।

7.2.6 बचत के प्रकार (Types of Saving)

बचत को प्रमुख रूप से दो वर्गों में रख सकते हैं -

(क) अनिवार्य बचत (Compulsory saving)

(ख) स्वैच्छिक बचत (Voluntary saving)

(क) अनिवार्य बचत (Compulsory saving) : नौकरी-व्यवसाय से जुड़े लगभग हर व्यक्ति को सेवा शर्तों के अंतर्गत अपने वेतन से हर महीने कुछ कटौती करनी होती है। यह अनिवार्य बचत प्रॉविडेंट फंड कटौती के रूप में होती है। इसके अंतर्गत मुख्यतः निम्नलिखित योजनाएँ हैं -

(i) भविष्यनिधि योजना (Provident fund) : इसके तहत सरकारी, अर्द्ध सरकारी तथा सरकार के नियंत्रण में चलनेवाली स्वशासीत (Autonomous) सेवाओं में सेवारत स्थायी कर्मचारी के मूल वेतन से उसका दस प्रतिशत (या इसके आसपास) भाग भविष्यनिधि कटौती के रूप में काटा जाता है और इस प्रकार जितना प्रतिशत काटा जाता है उतनी ही प्रतिशत रकम सरकार द्वारा और मिलाकर उसे भविष्यनिधि खाते में जमा किया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर इस निधि से सरकार से आदेश प्राप्त कर

संस्था के प्रधान के संयुक्त हस्ताक्षर से स्वीकृत ऋण भी लिया जा सकता है।

(ii) सामूहिक बीमा योजना (Group Insurance Scheme) : इस योजना के अंतर्गत सरकारी, अर्द्धसरकारी एवं सरकार के नियंत्रणाधीन स्वशासी सेवाओं में नियुक्त कर्मचारियों के वेतन से एक निश्चित रकम मासिक प्रीमियम के रूप में सामूहिक बीमा योजना के अंतर्गत प्रतिमाह काट लिया जाता है। सेवाकाल में ही कर्मचारी की मृत्यु होने पर इस प्रीमियम के आधार पर जीवन बीमा के सभी लाभ उसके उत्तराधिकारी या उसके द्वारा नामांकित व्यक्ति को मिलते हैं। सेवा से अवकाश ग्रहण करने पर संपूर्ण संचित निधि पैसा सूद के साथ लौटा दिया जाता है।

वर्तमान समय में भविष्यनिधि तथा सामूहिक बीमा योजनाओं को अधिकतर गैरसरकारी संस्थाओं, व्यापारिक प्रतिष्ठानों आदि में भी लागू किया जा रहा है।

(ख) स्वैच्छिक बचत : हर आदमी अपनी आय का कुछ अंश आने वाले दिनों के लिए बचाकर रखना चाहता है। यह काम वह स्वेच्छा से करता है। इस तरह बचाई गई धनराशि को विभिन्न सरकारी योजनाओं में निवेश किया जा सकता है। इनमें निम्नलिखित मुख्य है -

(i) आयकर में छूट देनेवाली योजनाएँ (Income tax saving schemes) : ऐसी योजनाएँ भारत सरकार, भारतीय जीवन बीमा निगम तथा राष्ट्रीयकृत बैंकों की ओर से चलाई जाती है। इनमें निम्नलिखित मुख्य है -

प्रमुख सरकारी योजनाएँ

राष्ट्रीय बचत प्रमाण-पत्र (National saving certificate)

यह सरकारी योजना डाकघरों में लागू है। इसके अंतर्गत जमा धनराशि छः वर्षों के बाद मिलती है। ये पत्र एक सौ रुपये, एक हजार रुपये तथा पाँच हजार रूपये के मिलते है। छः वर्ष के बाद एक सौ रुपये का दो सौ एक रुपया पचास पैसा, एक हजार रुपए का दो हजार पंद्रह रुपया तथा पाँच हजार रुपये का दस हजार पचहत्तर रुपया हो जाता है। इसमें ब्याज आयकर मुक्त होता है। जमा धनराशि पर भी आयकर में छूट मिलती है।

राष्ट्रीय बचत योजना (National saving scheme)

यह सरकारी योजना डाकघरों में लागू है। इसके अंतर्गत धनराशि छः वर्षों के लिए जमा की जाती है। इसके अंतर्गत जमा धनराशि पर आयकर में शत-प्रतिशत छूट मिलती है, पर निकासी के बाद संपूर्ण प्राप्त राशि पर आयकर लगता है।

जीवन बीमा योजनाएँ : भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएँ जैसे - सीमित भुगतान जीवन बीमा (Limited Payment Life Policy) बंदोबस्ती बीमा (Endowment Policy) तथा बहुउद्देशीय बीमा (Multipurpose Policy) आदि लागू है। इसके अतिरिक्त अनेक नई योजनाएँ - जैसे - जीवन-धारा, जीवन-अक्षय आदि भी लागू की गई है। इन सभी योजनाओं में जमा किए जाने वाले प्रीमियम (Premium) पर या जमा की गई राशि पर आयकर-कटौती में छूट मिलती है।

बैंक योजनाएँ : राष्ट्रीयकृत बैंकों, जैसे - स्टेट बैंक तथा केनरा बैंक द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएँ जैसे मैगनम (Magnum) आदि लागू है। इन योजनाओं में निवेश की जानेवाली पूँजी पर आयकर मे विशेष छूट मिलती है। यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया की योजनाएँ - यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया द्वारा दस रुपये के यूनिट (Unit) जारी किए जाते हैं। इस ट्रस्ट द्वारा यूनिटों की खरीद की विभिन्न योजनाएँ लागू की गई हैं। इन योजनाओं में निवेश की जानेवाली धनराशि के लिए खरीदी जानेवाली यूनिटों पर भी आयकर की कटौती में विशेष छूट मिलती है।

(ii) शुद्ध लाभ देनेवाली योजनाएँ (Pure Profit Giving Scheme)

इस प्रकार की अनेक योजनाएँ है। बचत द्वारा निर्मित पूँजी को इन योजनाओं में निवेश कर शुद्ध मुनाफा कमाया जा सकता है। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित है -

सरकारी ऋण (Government loans)

समय-समय पर राज्य एंव केन्द्रीय सरकार द्वारा अपनी विभिन्न योजनाओं को पूरा करने के लिए ऋण जारी किए जाते हैं। ये ऋण एक निश्चित अवधि जैसे छः वर्ष, नौ वर्ष या दस वर्ष आदि के लिए निश्चित वार्षिक ब्याज पर जारी किए जाते हैं। इन ऋणों में निवेशित पूँजी शत प्रतिशत सुरक्षित होती है। इनमें निवेशित पूँजी के डूबने का कोई खतरा नहीं होता है। यही कारण है कि इनमें दी जानेवाली ब्याज दर कम होती है। इन ऋणों के ऋणपत्र खरीदकर बचत द्वारा निर्मित पूँजी को निवेशित कर मूलधन को पूर्ण तथा सुरक्षित रखते हुए शुद्ध मुनाफा अर्जित किया जा सकता है।

कंपनियों के शेयर (Shares)

विभिन्न कंपनियों को अपने विस्तार के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। इस धन को प्राप्त करने के लिए वे समय-समय पर अपने शेयर जारी करती हैं। इन शेयरों पर ब्याज दिया जाता है। सामान्यतः कंपनियों द्वारा अपने शेयरों पर दी जानेवाली ब्याज-दर सरकार द्वारा दी जाने वाली किसी भी ब्याज-दर (Rate of interest) से अधिक होती है।

पर, इन शेयरों को खरीदने में एक खतरा यह है कि अगर कंपनी डूब गई तो शेयरों में निवेशित पूँजी भी डूब जाती है। टाटा / बिड़ला / शालीमार आदि जैसी कंपनियों के डूबने का कोई खतरा नहीं होता है।

बैंक में जमाकर (Bank Deposit)

अगर व्यक्ति कोई खतरा (Risk) उठाना नहीं चाहता हो तथा कम से कम मेहनत में अपनी बचत की रकम पर लाभ कमाना चाहता हो तथा यह भी चाहता हो कि वह जब चाहे तब अपनी पूरी की पूरी रकम वापस ले सकें तो उसे किसी **राष्ट्रीयकृत बैंक (Nationalized bank)** के बचत या चालू खाता में खाता खोलकर अपनी बचत की रकम जमा करनी चाहिए। इसमें ब्याज-दर कम होती है।

सूद पर कर्ज देना (To Give Loan on Interest)

अगर व्यक्ति मुनाफा कमाना चाहता हो तो वह अपनी बचत की रकम को स्वयं ऊँचे सूद पर (On high interest rate) कर्ज लगा सकता है। पर, सूद पर कर्ज लेना गैर कानूनी है। अतः कर्ज पर लगाए गए पैसे की वापसी, सूद मिलने तथा मूलधन के डूब जाने आदि से संबंधित सभी प्रकार की जिम्मेवारी कर्ज देनेवाली की होती है।

इन्हें भी जानें - पूँजी निवेशित करने तथा उससे लाभ अर्जित करने के संदर्भ में यह हमेशा याद रखना चाहिए कि अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए अधिक खतरा उठाना होगा। वे योजनाएँ जो मूलधन (Capital) को पूर्ण तथा सुरक्षित रखने की गारंटी देती हैं। कम लाभ देनेवाली होती है।

7.3 समय एवं शक्ति-बचत उपकरण (Time and Energy Saving Equipments)

आधुनिक युग में विज्ञान की उन्नति के फलस्वरूप कई प्रकार के यन्त्रों का आविष्कार हुआ है, जो कि गृहिणी के समय एवं शक्ति की बचत में अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। आज की पढ़ी लिखी गृहिणी, जो गृह-कार्य के अतिरिक्त घर के बाहर भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भी कार्य करती हैं, इन यन्त्रों के प्रयोग से सब कार्य सुचारू रुप से सुविधापूर्वक कर सकती हैं। इस प्रकार गृहिणी समय और शक्ति के व्यय के खर्च को रोककर उनका सदुपयोग कर सकती हैं।

मुख्य समय-बचत, शक्ति बचत के कुछ उपकरण निम्नलिखित हैं -

1. गैस से संबद्ध समय-शक्ति बचत उपकरन, जैसे- गैस-चूल्हा, भोजन पकाने का रेंज।
2. बिजली से संचालित समय-शक्ति बचत उपकरण, जैसे- रेफ्रीजरेटर, विद्युत-स्टोव, टोस्टर, कॉफी, परकोलेटर, बिजली की केतली, मिक्सर तथा ग्राइंडर, बर्तन धोने की विद्युत मशीन, कपड़े धोने की मशीन, विद्युत इस्त्री, वैक्यूम क्लीनर।
3. अन्यान्य समय-शक्ति बचत उपकरण, जैसे-प्रेशर कुकर, सिलाई मशीन।

7.3.1 गैस से संबद्ध समय-शक्ति बचत उपकरण

एल.पी.जी. गैस-चूल्हा : आधुनिक युग में विज्ञान के आविष्कार की नवीन, सरल, कमखर्च और सुविधा जनक साधनों में से गैस-चूल्हा भी एक अपना महत्व रखता है। यह लगभग हर घर में उपयोग में लाया जाने लगा है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है इसका धुआँ या कालिख-रहित होना।

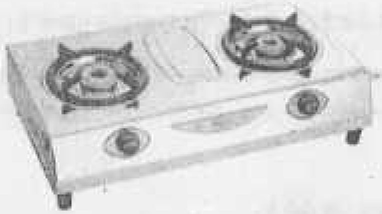

रख-रखाव : गैस-चूल्हे का उपयोग करना अत्यधिक सुविधाजनक है पर, अगर इसका उपयोग सावधानीपूर्वक न किया जाए तब यह अत्यधिक खतरनाक भी प्रमाणित हो सकता है। इसके सिलिंडर में बहुत ही उच्च दबाव पर आसानी से जल सकने वाली गैस तरल अवस्था में रहती है। थोड़ी भी असावधानी होने से, जैसे रबरनली में लीक होने या रेगुलेटर खराब होने आदि की स्थिति में, सिलिंडर फटने तथा आग लगने के कारण भयंकर दुर्घटना होने की संभावना रहती है। अतः यह आवश्यक है कि गैस - पाइप तथा रोजगार की बराबर जाँच पड़ताल होती रहे। गैस-चूल्हे के बर्नरों को हमेशा साफ करते रहना चाहिए। इसमें कार्बन जाम हो जाता है तथा ये बंद हो जाते हैं। बाहरी गंदगी पड़ने से भी ये बंद हो जाते हैं, बर्नर साफ न होने से चूल्हा अच्छी तरह नहीं जलता है।

अतः इन बर्नरों को हमेशा साफ करते रहना चाहिए। इसके लिए इनके छिद्रों को महीन तार वाले ब्रश या पतली सूई की सहायता से साफ कर देना चाहिए। इसके बाद इन्हें सोडायुक्त जल में रखकर खौला देने से भी अच्छी तरह से साफ हो जाते हैं। व्यवहार

के बाद चूल्हे को सूखे कपड़े से चारों तरफ से भली-भाँति रगड़कर पोंछ देना चाहिए। चूल्हे व गैस-सिलेंडर को क्रमशः चूल्हा-स्टैंड और सिलेंडर-स्टैंड पर रखना चाहिए। ऐसा करने से चूल्हें और गैस सिलेंडर के नीचे की जगह को साफ करना आसान होता है। जहाँ पर रबर-नली चूल्हे और गैस सिलेंडर से जुड़ती हैं वहाँ पर जब रबर-नली की सतह पर दरारें पड़ने लगें तब उसे बदल देना चाहिए।

- गैस प्रेशर कुकर
  - मुख्य अंग (Body)
  - ज्वालक (Burner)
  - नियन्त्रक
  - नली तथा सिलेंडर

गैस चूल्हा के अंग :

(क) मुख्य अंग (Body) : यह लोहे का बना होता है। इसकी बाह्य सतह एनामेल परत से ढकी होती हैं। इस प्रकार इसकी सतह चिकनी और आकर्षक होती हैं तथा इसे सरलता से स्वच्छ किया जा सकता है।

(ख) ज्वालक (Burner) : स्टोव के आकार के अनुसार इसमें एक अथवा एक से अधिक ज्वालक हो सकते हैं। स्वयं ज्वालक भी विभिन्न आकार के होते हैं तथा उनमें एक या दो रिंग होते हैं जो नीचे या ऊँची लौ देते हैं।

(ग) नियन्त्रक : स्टोव में ज्वालकों की संख्या के अनुसार दो या दो से अधिक गुटके 'बन्द स्थिति' 'खुलीस्थिति' 'उच्च तथा निम्न स्थिति' को प्रदर्शित करने का कार्य करते हैं तथा इनसे लौ नियन्त्रित की जाती है।

(घ) नली तथा सिलेण्डर : स्टोव सिलेण्डर द्वारा नली से सम्बन्धित होता है। इससे होकर गैस सुरक्षापूर्वक गुजरती है।

इन्हें भी जानें - प्रयुक्त करने के पश्चात् सर्वप्रथम सिलेण्डर को बन्द करना चाहिए, तत्पश्चात् नली में स्थिति गैस को समाप्त होने देनी चाहिए।

गैस-चूल्हा से लाभ

(i) गैस-चूल्हा प्रयोग में लाने में किसी प्रकार की विशेष कठिनाई नहीं होती है।

(ii) यह एक स्वच्छ पद्धति है। गैस-चूल्हा को सरलता से साफ किया जा सकता है।

(iii) यह दैनिक व्यय की दृष्टि से कम खर्चीला है।

(iv) इसे रखने के लिए कम स्थान की आवश्यकता पड़ती है। इसे बैठ कर अथवा खड़े होकर खाना पकाने - दोनों ढगों में प्रयुक्त किया जा सकता है।

(v) लौ को कम या ज्यादा करने की व्यवस्था रहने से सभी प्रकार के भोजन पकाये जा सकते हैं।

(vi) इसमें समय और शक्ति की बचत होती है।

(vii) बर्तन, कपड़े तथा हाथ गंदे नहीं होते हैं।

भोजन पकाने का रेंज (Cooking Range)

वर्तमान युग में सभी प्रकार के भोजनों को पकाने, भूनने तथा सेंकने के लिए कुकिंग रेंज का प्रयोग किया जाने लगा है। एक समय में कई वस्तुएँ एक साथ पका कर समय और श्रम की बचत की जाती है।

खाना पकाने की रेंज तीन प्रकार की होती है -

(i) बिजली द्वारा संचालित रेंज

(ii) गैस की रेंज

(iii) मिट्टी के तेल की रेंज तीनों प्रकार की रेंज का कार्य समान है, अंतर केवल ईंधन के प्रयोग में होता है।

रेंज के मुख्य अंग

(क) चौखट (Frame)

(ख) बर्नर्स (Burners)

(ग) भट्ठी (oven)

(घ) गैस रेंज

रख-रखाव

प्रयोग में लाने के पश्चात् उसे साबुन के घोल में मुलायम कपड़े को गीला कर निचोड़ कर साफ करना चाहिए। अधिक गंदा होने या दाग लग जाने पर कपड़ा साफ करने वाले सोडे का भी व्यवहार किया जा सकता है, परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सोडे का व्यवहार एल्युमिनियम के रेंज पर न हो। साबुन के गर्म या ठंडे घोल से साफ करने के बाद उसे सूखे मुलायम कपड़े से तुरन्त ही पोछ देना चाहिए। नमी या पानी से रेंज पर धब्बे बन जाते हैं। ज्वालक को पूर्ण स्वच्छता के लिए साबुन और सोडे के घोल में उबालना चाहिए। इससे पूर्ण चमक आ जाती है। ताप नियंत्रक शीशे को चूने से साफ करना चाहिए। गैस के पीपे तथा नली की सफाई के साथ उसे ठीक से बन्द करना आवश्यक है।

रेंज से लाभ

1. इस पर खाना जल्द बन जाता है, जिससे समय और श्रम की बचत होती है। इस पद्धति से भोजन तथा रसोईघर स्वच्छ रहता है, इसमें अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
2. इसमें ईंधन की बचत होती है तथा भोजन स्वादिष्ट होता है, क्योंकि पकायी जाने वाली वस्तुओं के ताप के सहन करने के आधार पर ताप को नियंत्रित किया जाता है।
3. भोजन पकाने की अनेक विधियों का प्रयोग रेंज में किया जा सकता है, जैसे - पकाना, भूनना और सेंकना आदि।

7.3.2 बिजली से संचालित समय-शक्ति बचत उपकरण

रेफ्रीजरेटर

रेफ्रीजरेटर, भोजन-कक्ष का एक आवश्यक अंग बन गया है। विभिन्न क्षमताओं एवं रंग रूपों वाला रेफ्रीजरेटर गृहिणी के समय एवं ऊर्जा की बचत करने वाला आवश्यक पर महँगा उपकरण है। भोज्य पदार्थों को आस-पास के वायुमण्डल के ताप से निम्न बिन्दु पर ठण्डा करने का काम करने वाला उपकरण ही रेफ्रिजरेटर कहलाता है। रेफ्रिजरेटर के भाग

रेफ्रिजरेटर के भाग —
- → कैबीनेट
- → दरवाजा
- → फ्रीजर
- → चिल ट्रे
- → शैल्फ
- → क्रिस्पेटर
- → नियामक
- → मोटर

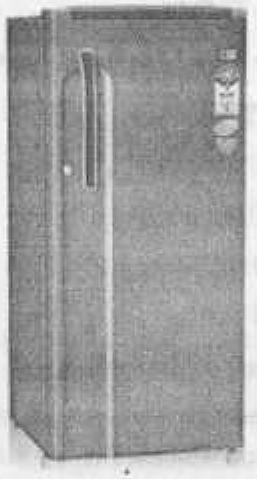

(i) कैबीनेट (Cabinet) : कैबीनेट इस्पात की चादर की बनी होती है। इस्पात के आन्तरिक और बाह्य खोल इस प्रकार ढाले जाते हैं कि चादरों के बीच में रोधन हो सके।

(ii) दरवाजा : रेफ्रिजरेटर की दीवारों के समान दरवाजा भी भली प्रकार से रोधन (Insulted) किया हुआ होना चाहिए। दरवाजे के बाहरी किनारों के चारों तरफ कास्केट लगा होता है, जो सील का काम करता है। कास्केट अधिकांश बिनाइल से प्रयुक्त किया जाता है। यह रबर से अच्छा होता है क्योंकि चिकनाई से इसको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचती।

(iii) फ्रीजर (Freezer) : यह कैबीनेट में सबसे ऊपर का भाग होता है तथा यह पृथक् से ही एक छोटा सा डिब्बा जैसा होता है। जिसका ताप 0° फा० रहता है। मुख्यतः बर्फ और मलाई बर्फ जमाने के काम में आता है।

(iv) चिल ट्रे (Chill tray) : यह फ्रीजर के नीचे वाली ट्रे है। इसका ताप 1°F से कुछ अधिक ही बनाए रखा जाता है। इसका उपयोग भोज्य पदार्थ को ठण्डा रखने तथा रेफ्रिजरेटर को डीफ्रोस्ट (Deforsting) करते समय जल एकत्रित करने के लिए किया जाता है।

(v) शैल्फ (Shelves) : शैल्फ एक विशेष प्रकार की धातु की छड़ों की बनी होती है कि उनमें छोटी-छोटी प्लेटें भी रखी जा सकती हैं, परन्तु वायु संचरण के लिए पर्याप्त स्थान रहता है। शैल्फ स्थायी रूप से नहीं लगी होती है, उन्हें भोज्य कक्ष (Chamber) को

छोटा बड़ा बनाने की दृष्टि से थोड़ा नीचे-ऊपर खिसका सकते हैं। सबसे नीचे के खाने की अपेक्षा सबसे ऊपर के खाने का ताप पर्याप्त रूप से निम्न रहता है।

(vi) क्रिस्पेटर (Crispator) : एक ही दराज (Drawer) का होता है तथा उसे ढकने के लिए ऊपर सिरे पर शीशे का ढक्कन लगा रहता है। फ्रीजर के ताप की अपेक्षा यहाँ का ताप सबसे अधिक रहता है।

(vii)नियामक (Regulator) : यह रेफ्रिजरेटर के ताप को नियन्त्रित करता है। सर्वाधिक गर्म और सर्वाधिक ठण्डे ताप का अन्तर शून्य से 25 अंश फारेनहाइट के मध्य करता है। साधारणतः यह रेफ्रिजरेटर के पीछे की ओर अथवा बगल से 'फ्रीजर' के ठीक नीचे लगा होता है।

(viii) मोटर (Motor) : मोटर कैबीनेट के ठीक नीचे लगा होता है, यह पृथक् से खुला या बन्द मशीन के रूप में होता है।

रख-रखाव

रेफ्रीजरेटर को सप्ताह में एक बार अवश्य साफ करना चाहिए इसके लिए सबसे पहले इसका स्विच ऑफ (Switch off) कर देना चाहिए। तब बाहर निकाले जा सकने वाले इसके सभी हिस्सों जैसे चिलट्रे, सेल्फ, वेजीटेबुल ट्रे, ग्लास टॉप आदि को बाहर निकाल देना चाहिए। इन्हें सर्फ, सोडा या साबुन की सहायता से अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए और तब फ्लैनेल के सूखे बड़े टुकड़े से अच्छी तरह पोंछकर सुखा लेना चाहिए। फ्रीज के शेष भागों को भी अच्छी तरह से धो-पोछ देना चाहिए। फ्रीज के दरवाजे के रबर वाशर की सफाई ध्यानपूर्वक की जानी चाहिए। प्रायः इसमे खाद्यान्न के दाने या अन्य पदार्थ फँस जाते हैं। इसेसे फ्रीज का दरवाजा ठीक से बन्द नहीं होता तथा फ्रीज वायु-रोधक नहीं हो पाता है। फलतः फ्रीज के अंदर की ठंढक बाहर तथा बाहर की गर्मी फ्रीज के अंदर आती रहती है। इससे फ्रीज के कंप्रेशर पर अधिक दबाव पड़ने लगता है तथा फ्रीज के खराब होने का खतरा उत्पन्न हो जाता है। अतः फ्रीज जब भी खोला जाए, इस बात का ध्यान रखना अत्यावश्यक है कि फ्रीज को फिर अच्छी तरह बंद कर दिया जाए। इसके अतिरिक्त, ऐसा प्रयास होना चाहिए कि फ्रीज को कम-से कम बार खोलने की आवश्यकता पड़े। फ्रीज के अंदर की अच्छी तरह सफाई करने के बाद बाहर निकाले गए उसके सभी सामानों को पुनः यथास्थान अवस्थित कर दिया जाना चाहिए। फ्रीज की बाहरी सतह (outer surface) को भी साबुन, सोडा या सर्फ के घोल से स्पंज के एक बड़े टुकड़े की सहायता से साफ कर देना चाहिए। इन दिनों इस काम के लिए कोलिन जैसे विभिन्न रसायन भी बाजार में उपलब्ध हैं। अंदर-बाहर से फ्रीज को भली-भाँति साफ कर लेने के बाद फ्लैनेल के सूखे बड़े टुकड़े से पोंछकर इसे चमका देना चाहिए। फ्रीज के दरवाजे को कुछ देर खुला छोड़ देना चाहिए। इससे उसके अंदर का भाग शीघ्र सूख जाएगा तथा अगर फ्रीज के अंदर कोई गंध होगी तो वह भी उड़ जाएगी। जब फ्रीज अच्छी तरह साफ हो जाए तब उसके दरवाजे को भली-भाँति बंद कर उसमे पुनः लाइन दे देना चाहिए। फ्रीज को हमेशा फ्रीज स्टैंड पर ही रखना चाहिए। इससे फ्रीज के नीचे की जगह की सफाई करने में सुविधा होती है। दीवार तथा फ्रीज की पीठ (Back of the Refrigerator) पर लगी तार की जाली या कंप्रेशर के बची कम-से-कम आठ से दस इंच तक की दूरी अवश्य होनी चाहिए। इससे फ्रीज के पीछे वायु-संचरण (Air circulation) ठीक से होता रहता है।

लाभ

(i) यह समय, शक्ति तथा श्रम सम्बन्धी बचत करने वाली प्रविधि है।

(ii) रेफ्रिजरेटर भोज्य सामग्री को नष्ट करने, एन्जाइम (Enzymes) फफूँदी (Moulds), खमीर (Yeasts) तथा जीवाणुओं (bacteria) की वृद्धि को अवरुद्ध करके भोज्य-पदार्थों को सुरक्षित रखता है। शीघ्र नष्ट होने वाले भोज्य-पदार्थ जैसे मछली, अण्डा, दूध, क्रीम, मक्खन आदि कई दिनों तक ठीक दशा में संग्रहीत किए जा सकते हैं।

(iii) ताजा भोजन के विटामिन को रेफ्रिजरेटर द्वारा बनाए रखना सम्भव है।

(iv) गर्मी के दिनों में बर्फ, ठण्डा पानी, मलाई की बर्फ सुविधापूर्वक प्राप्त हो जाती है।

इन्हें भी जानें - नई बर्फ जमाने के लिए रखने से पूर्व बर्फ की तश्तरी को खाली करके साबुन के पानी से धोकर सुखा देना चाहिए।

विद्युत-स्टोव (Electric Stove)

श्रमबचाऊ साधनों में बिजली के स्टोव का भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। यह भोजन पकाने तथा दूध, चाय आदि गर्म करने के लिए अत्यंत स्वच्छ, सुविधामय तथा सरल साधन है। विद्युत स्टोव में खाना शीघ्र बनता है।

विद्युत-स्टोव कई प्रकार के होते हैं, जैसे- गोल, चपटे और चौड़ी अंगीठी के आकार के आदि। इनमें तार की कुंडली (Coil) लगी होती है, जो कि विद्युत-धारा से गर्म हो कर लाल हो जाती है। कुछ स्टोवों में ताप कम तथा अधिक करने के लिए ताप नियंत्रण की व्यवस्था रहती है।

टोस्टर (Toaster)

टोस्टर एक छोटा सा विद्युत उपकरण है, जिसका उपयोग डबल रोटी के स्लाइस को सेंकने के लिए अधिकांश परिवार में किया जाता है। एक सुसज्जित गृह में टोस्टर आवश्यक ही होता है, क्योंकि यह एक आवश्यकता है तथा इससे समय व शक्ति की बचत होती है।

टोस्टर - विद्युत - प्रवाह का एक परिणाम - उष्मा, उत्पादन है। उष्मा उत्पन्न करने वाले उपकरणों में तार के माध्यम से प्रवाहित की गई अधिकांश शक्ति उष्मा में परिवर्तित की जाती है। इस प्रकार विद्युत-शक्ति उष्मा-शक्ति में रूपान्तरित हो जाती है। उष्मा शक्ति के परिणामस्वरूप ही डबल रोटी का स्लाइस सेंका जाता है।

टोस्टर के प्रकार

(i) विद्युत टोस्टर।

(ii) स्वचालित टोस्टर।

(iii) कूप के आकार का स्वचालित टोस्टर।

(iv) भट्टी के आकार का स्वचालित टोस्टर, कूप तथा भट्टी के मिश्रित आकार के टोस्टर।

रख-रखाव

प्रयोग करने के तुरन्त बाद ही यदि उसमें डबल रोटी के टुकड़े लगे रह जाएँ तो उन्हें निकाल देना चाहिए।

टोस्टर को हटाने के लिए काँटों का उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे उष्मा-उत्पादक पुर्जे में हानि पहुँच सकती है।

इसे अन्दर और बाहर से सूखे कपड़े से साफ करना चाहिए। अन्दर से इसे साफ करने के लिए गीला कपड़ा कभी भी प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

इन्हें भी जानें - यदि विद्युत-धारा में विचलन प्रतीत हो तो टोस्टर का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए।

कॉफी परकोलेटर (Coffee percolator)

विद्युत कॉफी परकोलेटर

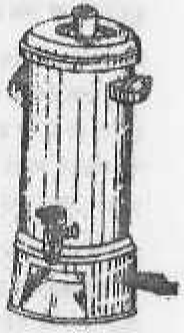

विद्युत कॉफी परकोलेटर वे होते हैं, जिनका संचालन विद्युत द्वारा होता है। कॉफी तैयार करने के लिए पानी का एक बर्त्तन तथा कॉफी रखने के लिए एक कटोरी होती है।

कॉफी के बर्तन के तले में ठण्डा पानी डाल दिया जाता है तथा यह ध्यान रखा जाता है कि कहीं कटोरी ठण्डे पानी में तो नहीं डूब गई है। जब जल का क्वथनांक (Boiling point) आ जाता है तो कटोरी के मध्य के केन्द्र बिन्दु में छिद्र से होकर निकल जाता है तथा बर्तन में पुनः वापिस किया जाता है। विद्युत के गुजर जाने के पूर्व वांछित रंग प्राप्त करने हेतु समय-सूचक का प्रयोग किया जाता है तथा ताप को नियन्त्रित कर दिया जाता है। कॉफी को थोड़ी देर के बाद निकाल लेते हैं।

रख-रखाव

कॉफी परकोलेटर पूरी तरह स्वच्छ होना चाहिए। इसे साबुन और पानी से धो देना चाहिये। इसके बाद जल में धोकर सुखा देना चाहिये। पूर्ण स्वच्छता के लिए उबलते सोडे के पानी में धोकर सुखा देना चाहिये। कॉफी परकोलेटर के ऊपर क्रोमियम चढ़ा हो, तो साबुन के गर्म पानी से भींगे हुए कपड़े से पोंछ देना चाहिये। तत्पश्चात् सूखे कपड़े से उस पर पॉलिश कर देना चाहिये।

इन्हें भी जानें - यदि कॉफी परकोलेटर एल्यूमिनियम का बना हो तो, सोडे के पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिये।

बिजली की केतली (Electric kettle)

समय एवं शक्ति के बचाव तथा स्वच्छता और शीघ्रता से पानी गर्म करने के लिए बिजली की केतली अत्यंत सुविधाजनक यंत्र है। इसमें बिना परेशानी के चाय तैयार हो जाती है।

बिजली की केतली धातु या स्टील की बनी हुई आकार की गोल, लम्बी, छोटी, बड़ी मिलती है। इसमें एक ओर लकड़ी का बना हत्था लगा रहता है। केतली में नीचे की ओर बिजली का तार लगाने की व्यवस्था रहती है। केतली के ऊपर ढक्कन होता है। जिसे हटाकर पानी डाला जाता है और बिजली का प्लग (Plug) लगा दिया जाता है। जब पानी उबलने लगता है, तो सन-सन की आवाज होने लगती है। आवाज होने पर बिजली का तार प्लग-बिन्दु (Plug point) से निकाल दिया जाता है। उबला हुआ पानी, चाय, कॉफी आदि बनाने के प्रयोग में लाया जा सकता है।

रख-रखाव

पानी खौल जाने के पश्चात् बिना प्लग निकाले केतली को नहीं पकड़ना चाहिए। प्रयोग करने के पश्चात् केतली का पानी निकालकर केतली को कपड़े से पोंछ कर रखना चाहिए। ताकि केतली में खनिज लवण की तह जमने न पाए।

इन्हें भी जानें - बिजली की केतली में लवण जम जाने पर उसे नींबू या अन्य किसी अम्ल से साफ कर देना चाहिए।

मिक्सर तथा ग्राइंडर (Mixer and Grinder)

प्रत्येक किचेन में भोजन बनाते समय तथा विशेष अवसरों पर अधिक मात्रा में मसाला, दाल एवं चटनी आदि पीसने में समय और शक्ति का अधिक व्यय होता है। आज के युग में मिक्सर तथा ग्राइंडर की महत्ता बढ़ गई है।

मिक्सर विद्युत् मोटर द्वारा चलता है, जो उसके निचले भाग में लगा रहता है। इसके ऊपरी भाग में शीशे या प्लास्टिक का पारदर्शक बर्तन होता है, जिसमें सभी प्रकार की रसीली चीजों को डाल कर कुचला जाता है, फलों का रस निकाला जाता है तथा केक-पेस्टरी बनाने के लिए अंडे को फेंटा जाता है। इसके द्वारा लहसुन, प्याज, अदरख, चटनी तथा भीगी हुई दाल भी आसानी से पीसी जा सकती है।

सूखे मसाले, दाल, चना और गेहूँ आदि पीसने के लिए इसमें अलग से बना हुआ ग्राइंडर भी लगाया जा सकता है। आवश्यकतानुसार ग्राइंडर को विद्युत मोटर के ऊपर लगा दिया जाता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के मसाले और दाल आदि महीन पिस कर स्वतः एकत्र होती रहती हैं।

रख-रखाव

ग्राइंडर को लगातार कई घंटो तक प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि लगातार व्यवहार करने से मोटर गर्म हो जाती है तथा उसके जलने का भय रहता है। अतः प्रत्यके पाँच सेकेण्ड के बाद मेंटर बन्द कर देना चाहिए।

प्रयोग में लाने के बाद पूर्णरूप से इसकी सफाई आवश्यक है। गीले कपड़ों से साफ करने के पश्चात् सूखे कपड़े से इसे अवश्य पोछना चाहिए।

बर्त्तन धोने की विद्युत-मशीन

रसोईघर के बर्तनों को साफ करने तथा धोने के लिए विद्युत-मशीन अत्यंत उपयोगी और सुविधाजनक होती है। ऐसी मशीन जूठी प्लेटें, कटोरियाँ, प्याले और थालियाँ आदि सभी प्रकार के बर्त्तन भली-भाँति साफ कर देती है। केवल वर्तन को रगड़ना, चमकाना और पोछना शेष रह जाता है जिसे हाथ से करना पड़ता है। इससे समय और शक्ति की अधिक बचत होती है तथा हाथ और वस्तु भी गंदी नहीं होती।

कपड़े धोने की मशीन (Washing Machine)

मानव-श्रम को कम करने के लिए तथा कम समय में अधिक वस्त्र धोने के लिए वस्त्र धोने की मशीन का निर्माण किया गया। इस मशीन में सभी प्रकार के सूत से बने हुए वस्त्र, जैसे-सूती, रेशमी, रेयन, लिनन, ऊनी आदि धोए जा सकते हैं।

यह मशीन विद्युत से संचालित होती है। इसमें एक ताप-नियन्त्रक होता है। जिसका उपयोग जल के ताप को नियन्त्रित करने के लिए किया जाता है।

विभिन्न प्रकार के वस्त्रों के लिए भिन्न-भिन्न ताप तथा समय निश्चित होता है।

जैसे -

वस्त्रों के प्रकार	तापक्रम	समय
1 सूती लिनन	190° फा०	3 मिनट
2 रेशमी, रेयन,ऊनी	90° फा०	2 मिनट
3 अन्य प्रकार के भारी वस्त्र, जैसे पर्दे, चादरें, तौलिए	200° फा०	4 मिनट

रख-रखाव

कपड़े धोने की मशीन रखने का स्थान विशेषकर स्नानगृह या उसके आसपास ही होना चाहिए। मशीन में धुलाई हेतु केवल साबुन का पाउडर जैसे सर्फ, साबुन का महीन चूरा (चूर्ण) प्रयोग करना चाहिए। मशीन में साबुन के बड़े टुकड़ों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। साबुन के टुकड़ों से मशीन के अन्दर के छिद्र बन्द हो जाते हैं। और मशीन अपना काम उचित रूप से नहीं कर पाती है। प्रयोग में लाने के पश्चात् मशीन से साबुन का गंदा पानी निकाल कर स्वच्छ पानी से उसे साफ कर देना चाहिए।

इन्हें भी जानें - वस्त्र धोते समय मृदु जल ही प्रयुक्त करना चाहिए। कठोर जल से उचित झाग उत्पन्न नहीं होता तथा वस्त्र में चमक नहीं आ पाती और सर्फ की अधिक खपत होती है।

विद्युत इस्त्री (Electric iron)

वस्त्रों की तह ठीक करने, उनमें चमक लाने तथा पहनने योग्य बनाने के लिए उन पर इस्त्री करना आवश्यक है।

बिजली की इस्त्री मे तापनियंत्रण की व्यवस्था रहने पर ताप की अधिकता या कमी का भय नहीं रहता।

विद्युत इस्त्री में विद्युत शक्ति उष्मा में परिवर्तित हो जाती है। उष्मा शक्ति के कारण ही इस्त्री को उच्च ताप पर गर्म किया जाता है।

विद्युत इस्त्री तीन प्रकार की होती है →
- स्वचालित इस्त्री
- अस्वचालित इस्त्री
- भाप इस्त्री

रख-रखाव

विद्युत इस्त्री का रख-रखाव करना सरल होता है। बॉक्स या प्लेट आयरन को मुख्यतः जंग लगने से बचाना पड़ता है। विद्युत आयरन में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वह भली-भाँति इनसुलेटेड (insulated) हो जिससे करंट लगने का खतरा न हो। इस्त्री को उपयोग में लाने से पूर्व वस्त्र की आवश्यकतानुसार ताप को नियन्त्रित कर लेना चाहिए। इस्त्री करने से पूर्व वस्त्र

को कम से कम आधा घण्टे पूर्व गीला कर लेना चाहिये। इस्त्री, प्रयोग करने के पश्चात् प्लग को निकाल देना चाहिए तथा इसे सीधी स्थिति में रखना चाहिये।

इन्हें भी जानें - जिन वस्त्रों को कम ताप की आवश्यकता होती है, उन पर सबसे पहले इस्त्री करनी चाहिए। तत्पश्चात् धीरे-धीरे क्रमशः अपेक्षाकृत अधिक ताप चाहने वाले वस्त्रों पर इस्त्री करनी चाहिये।

वैक्यूम क्लीनर (Vacuum Cleaner)

इस यंत्र का आविष्कार विदेशों मे हुआ। वैक्यूम क्लीनर कालीन, दरियाँ तथा फर्श स्वच्छ करने के काम में आता है। यह यंत्र दरी - कालीन आदि की धूल -मिट्टी को अपनी ओर खींच लेता है। इसमें वायुमण्डलीय दबाव हवा को कम दबाव वाले स्थान की ओर धकेलता है और धूल-मिट्टी आदि मशीन के अन्दर खिंच जाती हैं और संलग्न थैले में एकत्र हो जाती है।

वैक्यूम क्लीनर विभिन्न आकार-प्रकार के होते हैं तथा बिजली से और बिजली के बिना भी प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

(i) बिजली द्वारा संचालित साधारण वैक्यूम क्लीनर।

(ii) स्वचालित वैक्यूम क्लीनर।

रख-रखाव

प्रयोग में लाने के पूर्व क्लीनर के तार को विद्युत्धारा से संबद्ध कर दिया जाता है। स्वीच द्वारा क्लीनर की चाल को नियंत्रित कर दिया जाता है। फर्श, दरी, क्लीनर की चाल को नियंत्रित कर दिया जाता है। फर्श, दरी, या कालीन के प्रकार के अनुसार ब्रश तथा चोटी को लगा कर धीरे-धीरे क्लीनर को चलाया जाता है। सफाई करने के बाद थैली से धूल को निकाल देना चाहिए। काम समाप्त होने के उपरांत प्लग को प्लग-बिन्दु से निकालकर बिजली के तार को हत्थे के चारों ओर लपेट कर क्लीनर को खड़े रूप में रखना चाहिए।

लाभ

इस यंत्र के प्रयोग से थकावट नही होती तथा समय और शक्ति दोनों की बचत होती है। इसे व्यवहार में लाते समय वस्तु भी गंदी नहीं होती तथा कमरे की अन्य वस्तुएँ भी गर्द से गंदी नही होती। अतः यह सफाई का सुविधाजनक साधन है। दरी, गलीचे और कालीन आदि से धूलकण भली भाँति निकल जाने से उनकी आयु भी बढ़ जाती है।

इन्हें भी जानें - क्लीनर को प्रयोग में लाने के उपरांत कूड़े की थैली को रिक्त कर, क्लीनर में तेल और ग्रीस देना चाहिए।

7.3.3 अन्यान्य समय-शक्ति बचत उपकरण

प्रेशर कुकर

समय एवं श्रम की बचत करने वाला यह एक अत्यधिक प्रचलित उपकरण है।

सामान्यतः इसके दो प्रकार होते हैं -

(i) बाहर की ओर से लगाए जानेवाले ढक्कन युक्त, जैसे - प्रेस्टीज प्रेशर कुकर

(ii) अंदर की ओर से लगाए जाने वाले ढक्कन युक्त, जैसे - हॉकिंस प्रेशर कुकर।

दोनों ही प्रकार के प्रेशर कुकर अत्यधिक ताप एवं दबाव सह सकने की क्षमता से युक्त मिश्रितधातु से निर्मित होते हैं। इनमें सामान्यतः एबोनाइट की हैंडिल लगी होती है। यह गर्म नहीं होती हैं तथा मजबूत होती है। दोनों ही प्रकार के प्रेशर कुकर के मुख्य भाग लगभग समान होते (Parts) हैं।

प्रेशर कुकर के मुख्य भाग
- भगोना
- ढक्कन
- रबर का छल्ला
- जाली

रख-रखाव

प्रेशर कुकर ऐसी मिश्रितधातु (alloy) से बने होते हैं जिसमें जंग नहीं पकड़ता है। कुकर का उपयोग हो जाने के बाद इसे अंदर-बाहर से अच्छी तरह साफ कर देना चाहिए। वेट और रबर के छल्ले को अलग कर उन्हें अच्छी तरह साफ करना चाहिए। प्रायः इन दोनों में अन्न के दाने या अन्य पदार्थ चिपके रह जाते हैं। जिससे प्रेशर कुकर के अंदर प्रेशर ठीक से नहीं बन पाता क्योंकि प्रेशर कुकर वायु रोधक (Airtight) नहीं हो पाता है। सेफ्टी बाल्व की भी बराबर जाँच-पड़ताल करते रहना चाहिए। व्यवहार के बाद कुकर को साफ करके फ्लैनेल के एक साफ टुकड़े से अच्छी तरह रगड़कर चमकाने के बाद उसे सूखे स्थान पर रख देना चाहिए।

कुकर में भोजन पकाने से लाभ

(i) कुकर में भोजन पकाने से समय की बहुत बचत होती है। इसमें लगभग 1/3 समय में भोजन पक जाता है।

(ii) पकाने में कम समय लगने से ईंधन की खपत भी कम होती है। इस तरह ताप शक्ति की बचत होती है।

(iii) इसमें भोजन भाप से पकता है इसलिए भोज्य तत्व और स्वाद बना रहता है।

(iv) एक साथ ही दो या तीन वस्तुएँ अलग-अलग डिब्बों में पकायी जा सकती है।

(v) प्रेशर कुकर में भोज्य पदार्थ के लवण और विटामिन नष्ट नहीं होते।

(vi) इस विधि से पकाया गया भोजन स्वच्छ और स्वास्थ्यप्रद होता है।

सिलाई मशीन (Sewing machine)

गृहिणियों द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण एवं प्रचलित उपकरण है सिलाई मशीन (Sewing machine) यह सामान्यः तीन प्रकार की होती है।

सिलाई मशीन के प्रकार
- हस्तचालित (Hand operated)
- पाँव चालित (Leg operated)
- विद्युत चालित (Electric Operated)

एक सिलाई मशीन के मुख्य भाग होते हैं -

(i) फ्लाई ह्वील (Fly wheel)

(ii) बौबिन सौकेट और बौबिन (Bobbin socket and bobbin)

(iii) बौबिन स्क्रू (Bobin screw)

(iv) थंब नट (Thumb nut)

(v) नीड्ल सौकेट (Needle socket)

(vi) नीड्ल स्क्रू (needle screw)

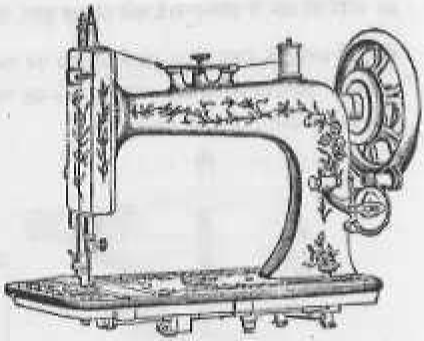

रख-रखाव

सिलाई मशीन को व्यवहार में लाने के पहले उसके सभी पार्ट-पूर्जों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर लेनी चाहिए। यह देख लेना चाहिए कि फ्लाई ह्वील ठीक से कसा हो, बौबिन-सौकेट में ठीक से लगा हुआ हो, सूई नीड्ल-सौकेट में ठीक से फिट हो तथा ऊपर - नीचे के धागों पर का दबाव (Thread pressure) समान हो। व्यवहार के बाद मशीन में तेल डालकर छोड़ देना चाहिए। प्रत्येक मशीन में तेल डालने की जगहें (Oil sports) बनी हुई रहती हैं। इन्हीं स्थानों पर तेल डालना चाहिए। पूरी मशीन को सप्ताह में कम-से कम एक बार अच्छी तरह पोंछकर चमका देना चाहिए। मशीन के किसी भी भाग में जंग नहीं लगने देना चाहिए।

7.3.4 घरेलू उपकरणों के चयन में सावधानी (Care in selection of Household Equipments)

समय एवं श्रम की बचत करने वाले घरेलू उपकरणों का उपयोग करने वाली गृहिणियों को इन उपकरणों जैसे - गैस चूल्हा, रेफ्रीजरेटर, प्रेशर कुकर, सिलाई मशीन, विद्युत इस्त्री, कपड़े धोने की मशीन, वैक्यूम क्लीनर, मिक्सर तथा ग्राइंडर, भोजन पकाने का रेंज, टोस्टर आदि का चयन करते समय जिन सावधानियों को बरतना आवश्यक है उनमें निम्नांकित मुख्य हैं -

(i) गृहिणी को सामान्यतः ऐसे ही घरेलू उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए जिनकी सफाई, देखरेख तथा छोटी, हल्की खराबी का सुधार वह स्वयं सुगमतापूर्वक कर सकती है।

(ii) बाजार में एक ही उपकरण की विभिन्न कंपनियों द्वारा तैयार की गई विभिन्न किस्में उपलब्ध रहती हैं, गृहिणी को सामान्यतः आइ० एस० आइ० मार्क (I.S.I Mark) वाला उपकरण ही खरीदना चाहिए। इस मार्क वाले उपकरणों की कार्यक्षमता स्थायित्व, सुरक्षा तथा विश्वसनीयता स्तरीय (Standard) रहती है।

(iii) कुछ बड़े, विद्युत उपकरण, जैसे - फ्रीज, वाशिंग मशीन, वैक्युम क्लीनर, ग्राइंडर मिक्सर आदि, उन्हीं कंपनियों का लेना ठीक रहता है जिनका "बिक्री के बाद सेवा (After sale service) सरलता से उपलब्ध हो तथा जो अपने सामान के लिए लिखित गारंटी (Guarantee) देती हैं।

(iv) गृहिणी को ऐसे ही उपकरणों को खरीदना चाहिए जिन्हें वह अपनी घर में व्यवस्थित ढंग से रख सके। प्रायः कई उपकरण मात्र इसलिए खराब हो जाते हैं कि उनको व्यवस्थित ढंग से रखने के लिए घर में उपयुक्त स्थान का अभाव होता है।

(v) घर की आय एवं आवश्यकता के अनुरूप ही घरेलू उपकरण खरीदना चाहिए। उपकरणों को केवल खरीदने के लिए ही खरीद लेना (Bying for only buying sake) वांछनीय नहीं होता है।

7.4 रसोईगृह-उद्यान (Kitchen Garden)

7.4.1 रसोई गृह - उद्यान का अर्थ

7.4.2 रसोई गृह - उद्यान की परिभाषा

7.4.3 रसोई गृह - उद्यान के उद्देश्य

7.4.4 रसोई गृह - उद्यान की योजना :- उपकरण, मिट्टी, देख-रेख, बीज तथा पौधों का प्रसार, बीजों से पौधे उगाना।

7.4.5 विधियाँ

7.4.6 बाग की जमीन :- लॉन, घेरा अघोलता, झाड़ी, क्यारियाँ, किनारी

7.4.7 पात्र में बागवानी घर के भीतर वाले पौधे

7.4.8 खाद

7.4.9 सजावटी पौधे गंधयुक्त फूल

7.4.10 महीनों के अनुसार बागवानी का कार्यक्रम

7.4.11 बोंसाई :- बोंसाई बनाने की विधियाँ, बोंसाई गमले।

7.4.12 रसोईगृह - बाग से लाभ।

7.4.1 रसोईगृह-उद्यान (Kitchen garden)

बागवानी एक महत्त्वपूर्ण उपयोगी शौक है। प्रत्येक घर के अहाते में अथवा रसोईघर के पीछे की खाली जमीन में फूल अथवा पेड़-पौधों को लगाया जा सकता है। खाली समय का सदुपयोग करके थोड़े-से परिश्रम से परिवार को ताजी सब्जी प्राप्त हो जाती है। बाजार से सब्जी प्रतिदिन खरीदने जाने का समय भी बचता है। परिवार के व्यय को कुछ सीमा तक कम किया जा सकता है। फूल के पौधों से घर का वातावरण सुखद और आकर्षक हो जाता है। रंग बिरंगे फूल, पक्षी और सब्जी आसपास की नीरसता को समाप्त करके सजीवता एवं जागृति ला देते हैं, सुगन्धित, सौरभयुक्त वायु स्वास्थ्य के लिए भी लाभप्रद सिद्ध होती है।

परिवार के सदस्यों की कलात्मक रुचि और आवश्यकताओं का प्रतीक घरेलू उद्यान माना जाता है। घरेलू बागवानी में छोटे-छोटे पौधे, झाड़ी, लत्तर, फूल तथा सब्जियाँ उपजायी जाती हैं। स्थानाभाव में गमले, टीन के डिब्बे, काठ के बक्से, टूटी बाल्टी आदि में फूल तथा सब्जियाँ आसानी से उपजाई जा सकती है।

घरों की छत, छप्पर, ग्रील आदि पर मौसमी तरकारियों की लताएँ आसानी से चढ़ाकर सब्जी प्राप्त की जा सकती है। अमरूद, नींबू, पपीता, केला आदि मौसमी, फलों, के वृक्ष घरेलू उद्यान में लगाये जा सकते हैं, रसोईघर के लिए बाग लगाना एक आकर्षक और सुखद अनुभव है।

7.4.2 रसोईगृह - उद्यान की परिभाषा (Definition of kitchen garden)

रसोईगृह - उद्यान उस बाग को कहा जाता है जो घर के पिछवाड़े या बगल में या घर के आँगन में (in the back portion of sides or courtyard of the house) अवस्थित खुली जगह (Open space) मे लगाया जाता है।

Roy Hay के अनुसार "A garden must essentially be an individual thing, reflecting the tastes and requirements of the family to which it belongs."

मान के शब्दों में,

Roising a kitchen garden is a fascinating experience. the greatest satisfaction a family gets from it is that vegetables produced in the home garden are used in their most fresh stug."

7.4.3 रसोईगृह-उद्यान का उद्देश्य (Purpose of kitchen garden)

रसोईघर-बाग लगाने का उद्देश्य है कि जहाँ भी स्थान उपलब्ध है या स्थान नहीं भी है, फिर भी जनता को भोज्य सामग्री ताजे और शुद्ध रूप में प्राप्त कराना है। कम परिश्रम तथा कम खर्च में विटामिन और खनिज लवण जैसे पोषक तत्वों की प्राप्ति करना। रसोईघर बाग में परिवार के लिए ऋतु के अनुसार विभिन्न प्रकार की सब्जी लगाई जा सकती है। घर में प्रयुक्त, मिट्टी खाद, पानी आदि प्रयोग की गई चीजें शुद्ध और उचित मात्रा में होती है। उचित देख-रेख से फली, सब्जी, सलाद, साग बाजार की सब्जियों से अधिक स्वादिष्ट और पोषक होती है। रसोईघर में प्रयुक्त पानी जैसे : चावल, सब्जी, मछली का धोवन पौधों की वृद्धि में सहायक होते हैं। रसोईघर से निकले पानी का सदुपयोग बगीचे में किया जा सकता है। पानी पटाने की अतिरिक्त मेहनत भी नही करनी पड़ती है।

इन्हें भी जानें - घरेलू बागवानी की योजना बनाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना चाहिए : परिवार के सदस्यों की संख्या उनकी भोज्य आवश्यकताएँ, स्थान तथा समय की पर्याप्तता स्थान की स्थिति, मिट्टी की किस्म तथा पानी की व्यवस्था।

7.4.4 रसोईगृह-उद्यान की योजना

उद्यान के लिए उपकरण : घर में खेती करने के लिए मुख्य रूप से मिट्टी खोदने के लिए खुरपी, पौधे और सब्जियों की कटाई के लिए कैंची, पानी पटाने के लिए प्लास्टिक का पाइप या फब्बारा, दवाई छिड़कने के लिए छिड़काव वाला पम्प, तथा लॉन की घास बराबर करने के लिए घास काटने की मशीन आवश्यक है। अच्छे और साफ औजार कार्य करने में सुगमता प्रदान करते हैं। इसलिए औजारों की देख-रेख आवश्यक है। प्रयोग में लाने के बाद भलीभाँति धोकर, पोछकर निश्चित स्थान पर रखना चाहिए।

इन्हें भी जानें - बाजार के बने उपकरणो की अपेक्षा कृषि विश्वविद्यालय के बने उपकरण अधिक मजबूत, सस्ते और कार्य करने में सुविधाजनक होते हैं।

मिट्टी तैयार करना : बाग या गमले की मिट्टी प्राकृतिक और गहरी होनी चाहिए। पौधे उगाने के पूर्व इस मिट्टी का किसी कृषि प्रदर्शन-केन्द्र में परीक्षण करवाकर उसकी खाद की किस्म के बारे में जानकारी हासिल कर लेना चाहिए। मिट्टी को खोदकर उसके ढेलों को तोड़ देना चाहिए। चिकनी मिट्टी में पानी ऊपर रह जाता है। जमीन के अन्दर हवा नहीं जा पाती है। बैक्टीरिया और पौधों के विकास के लिए हवा अत्यन्त आवश्यक है, इसलिए चिकनी मिट्टी में थोड़ी रेत मिला देनी चाहिए। चट्टानी मिट्टी में खेत या नदी के किनारे की ताजी मिट्टी मिलाकर ऊपरी सतह मुलायम बना देनी चाहिए। ऊपरी मिट्टी की सतह 23 से 25 मीटर गहरी होनी चाहिए। रसोई उद्यान के लिए ऐसा स्थान उपयुक्त होता है जहाँ दिन में कम से कम 6 घंटे धूप रहती है। मिट्टी में खाद मिलाकर उपयुक्त बनाना चाहिए। सूखी पत्ती और सड़ी खाद मिलाकर या फर्टीलाईजर्स का प्रयोग करना चाहिए। खाद को

बीजों की पंक्ति से दो इंच की दूरी पर दोनों तरफ तथा बीजों की गहराई से दो इंच गहरा रखना चाहिए। दूरी की मात्रा भिन्न-भिन्न सब्जियों के लिए अलग-अलग होती है।

रसोई उद्यान की देख-रेख : पुष्ट और अच्छी किस्म की सब्जी तथा फल-फूल पाने के लिए बाग की देख-रेख पर पर्याप्त तथा नियमित समय देना आवश्यक है। पौधों के उचित विकास के लिए, बाग की मिट्टी की गुड़ाई के साथ-साथ जंगली वनस्पतियों को जड़ से हटाना आवश्यक है अन्यथा यह-भूमि के बहुत से पौष्टिक भाग को शोषित कर लेती है। पौधों को विभिन्न प्रकार के कीड़ों और बीमारियों से बचाना चाहिए। किस पौधे पर किस दवा के स्प्रे का प्रयोग कितनी मात्रा में करना है इसकी जानकारी नजदीक के कृषि प्रदर्शन-केन्द्र से प्राप्त कर लेनी चाहिए। साधारण रूप से डी०डी०टी० अथवा अन्य ज़हरीली दवाओं का प्रयोग, छिड़काव तब तक नहीं करना चाहिए, जब तक कि फल पौधे पर हों। कीटाणु नियंत्रक दवाओं का प्रयोग बहुत हल्का करना चाहिए। छोटे-छोटे पौधों के बचाव के लिए कपड़ा, कागज या चौड़े मुँह की ओर काँटेदार झाड़ी लगाकर जानवरों से सुरक्षित करना चाहिए। बाग के बड़े कीड़े जैसे तिलचट्टे, घुआ, झिंगा, मत्कुण आदि को हटाते रहना चाहिए।

इन्हें भी जानें - बाग को गर्मी के मौसम में पानी की बहुत आवश्यकता होती है। पानी तब तक पटाना चाहिए जब तक भूमि पूरी तरह गीली न हो जाये। पौधों के लग जाने पर 25 ग्राम फर्टीलाईजर को एक गैलन पानी में मिलाकर पौधों पर छिड़कना चाहिए। प्रति सप्ताह बाग की सिंचाई भलीभाँति करना आवश्यक है।

बीज तथा पौधों का प्रसार (Seed and propagation of plants) : पेड़-पौधे बीजों से उत्पन्न होते हैं। कुछ पौधों की डालियाँ ही भूमि में गाड़ दी जाती है। वे पानी और गर्मी से जड़ पकड़ लेती है और उनमे से पौधे निकल आते हैं, जैसे गुलाब, चम्पा, बेला, रजनीगंधा आदि। किन्तु अधिकतर पौधे बीजों से ही तैयार होते हैं। बीज हमेशा उत्तम किस्म का प्रयोग करना चाहिए। अच्छी किस्म के बीज से अच्छे फल-फूल पैदा होते हैं। कुछ पेड़-पौधे ऐसे हैं जिनकी जड़े पनपा कर उस जाति के दूसरे पौधे उपजाए जाते हैं, जैसे ओल, डालिया आदि। कुछ ऐसे भी है, जिनके अंखुए लगाए जाते हैं और कुछ ऐसे है जिनके तनों से उस जाति के दूसरे-दूसरे पौधे तैयार किए जाते हैं।

बीजों से पौधे उगाना : जो पेड़-पौधे बीज से उगाए जाते हैं उनके बीजों का चुनाव करते समय कई बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। ऐसे पेड़-पौधों को ही बीजों के लिए चुनना चाहिए, जो पहले अच्छी तरह फूले-फले हों और दूसरे पेड़-पौधों से श्रेष्ठ हो साथ ही, जो स्वस्थ, नीरोग, पुष्ट और अधिक फल-फूल देने वाले हों।

स्वस्थ पेड़-पौधों में, जो फल या फूल पहले लगते हैं उन्हें पूरा पकने के लिए छोड़ दें। जब वे अच्छी तरह पक जाएँ, तब उन्हें तोड़ कर उनके बीजों को झाड़-सुखा कर उन्हें सूखी राख या गैमेक्सिन पाउडर के साथ मिला कर बंद बर्तन में अगली फसल के लिए रख छोड़ें।

साग-सब्जी तथा फूल के छोटे-छोटे बीज नर्सरी में, लकड़ी के बक्सों में या चौरस भूमि में बिचड़े के रूप में उपजाए जाते हैं। बिचड़े की जमीन की मिट्टी भुरभुरी होनी चाहिए। ऐसी मिट्टी में एक भाग बगीचे की मिट्टी, आधा भाग गोबर या कम्पोस्ट और चौथाई भाग बालू तथा राख मिला देते हैं।

बड़े बीजों को 2.50 से०मी० की गहराई में, मझोले आकार के बीजों को 1.25 से० मी० की गहराई में और बहुत छोटे-छोटे बीजों को बिचड़े के ऊपर ही लगा दिया जाता है या छींट दिया जाता है।

कड़े छिलके के बीजों के जमने में समय लगता है। अतएव उनके अंखुए निकालने के लिए उन्हें सींचने की आवश्यकता पड़ती है।

इन्हें भी जानें - बीजों को जमने के लिए जितने प्रकाश की जरूरत पड़ती है, उतनी ही हवा की और उतनी ही गर्मी की, तेज धूप में उनके अंखुए पनप नहीं पाते हैं।

7.4.5 विधियाँ

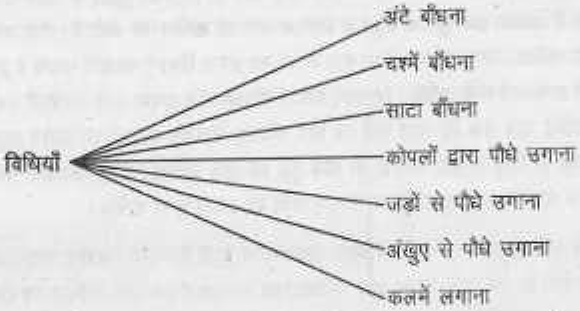

1. **अंटे बाँधना -** प्रायः लीची, अमरूद और नींबू में अंटा बाँधने में शत-प्रतिशत सफलता मिलती हैं । 7.9 से० मी० मोटी स्वस्थ डाल की गाँठ के नीचे चारों ओर का छिलका चाकू से छील दें। सड़ी मिट्टी में पत्तियों तथा मछली की खाद मिला कर कटे हुए भाग के चारों ओर चिपका दें। फिर उसे बोरी में लपेट कर पुआल की एक तह से भली-भाँति ढक दें और ऊपर से सुतली से बाँध दें। उसे हमेशा पानी से तर रखें। दो-तीन महीने में अंटे में जड़ें निकल आएँगी। जड़ें निकलने पर मिट्टी बँधे स्थान के नीचे से काट लें और अलग लगा दें।

2. **चश्मे बाँधना -** गुलाब आदि जैसे पौधों में, जिनकी कलमें लग सकती है, चश्में बाँधने में शत-प्रतिशत सफलता मिलती है। स्वस्थ शाखा के एक अंखुए को तेज चाकू से थोड़ी लकड़ी के साथ निकाल ले और उसे दूसरी जगह में लगे उसी जाति के पौधे के कोमल तने पर उसके छिलके के भीतर और कैंबियम (cambium) से सटा कर लगा दें या बाँध दें। उसमें जड़े उग जाएँगी। फिर जड़ सहित उस शाखा को काट कर अलग लगा दे। इस तरीके के लगाए गए पौधों के फूल-फल बड़े-बड़े होने लगते हैं।

3. **साटा-बाँधना -** दो भिन्न-भिन्न जातियों के कोमल तनों को छील कर परस्पर बाँध देने को साटा बाँधना कहते हैं। जो साटा बाँधा जाए, उसमें असुए या कलियाँ अवश्य रहें। आलू के साथ टमाटर का साटा बाँध कर ऐसा पौधा तैयार किया जाता है। जिसकी जड़ से आलू निकले और तने में टमाटर फलते रहें।

4. **कोपलों द्वारा पौधे उगाना -** केला, कैनी गुलदाबदी आदि पौधों के तनों के निचले भाग में जो जमीन में सटे रहते है, कोपले फूटती हैं। इन कोपलों को जड़ों या अंखुओं के साथ उखाड़ कर अलग लगा देने से नए पौधे तैयार हो जाते हैं।

5. **जड़ों से पौधे उगाना -** आलू, ओल, शकरकंद, जमीन के भीतर बैठने वाले पौधों की जड़ो में जो अंखुए होते हैं उन्हीं से उनके दूसरे पौधे उगाए जाते हैं। डालिया की जड़ से उगाए पौधे में बड़े-बड़े फूल लगते हैं। जड़ के अंखुओं से उगाए पौधे अधिक पुष्ट होते हैं। एक फसल समाप्त होने पर जड़ की पेपी को काट कर दूसरी जगह गाड़ दिया जाता है। वे अंखुए नए पौधों के रूप में पनप उठते हैं।

6. **अंखुए से पौधे उगाना** - नींबू, गुलाब आदि कुछ ऐसे पौधे हैं, जिनकी डालों में स्थान-स्थान पर गाँठे होती हैं। इन गाँठों को 'कली' भी कहा जाता है। पुष्ट डाली के स्वस्थ अंखुए को पत्तियों सहित 1.25 से० मी० की गहराई तक डाल के चौथाई भाग को लेते हुए निकालें। कली को गीली बालू में बढ़ने के लिए दो-तीन दिन तक छोड़ दें। फिर बालू तथा खाद के मिश्रण में उसे गमला में लगा दें।

7. **कलमें लगाना** - पौधों के पुष्ट और स्वस्थ तने को इस तरह कई टुकड़ों में काटें कि प्रत्येक टुकड़े पर अंखुए अवश्य रहें। कलम के लिए तने के टुकड़े तिरछे तेज चाकू से काटे जाएँ और उन्हें तिरछे ही जमीन में गाड़ दिया जाएँ। कुछ दिनों में उनमें नई शाखें निकल आयेंगी। कलमें काटने और उन्हें लगाने का काम प्रायः वर्षा ऋतु में होता है।

जिन शाखों में गाँठे होती हैं, उन्हीं की हरी कलमें पनपती हैं। मेंहदी की हरी शाखें, पैंसी क्लोरी की अधपकी शाखें तथा अंगूर और गुलाब आदि की पूरी पकी हुई पुष्ट शाखें ही काट कर अलग गाड़ देने से लगती हैं।

इन्हें भी जानें - कभी-कभी कलमों को पानी में रख कर भी उनमें जड़ें उगायी जाती हैं। बड़ी बोतल में आधा पानी भर दें, कलम के टुकड़े का आधा या तिहाई भाग उस पानी में डुबो कर छोड़ दें। दो या तीन सप्ताह में उसमें जड़े निकल आएँगी। जाड़े में फूलों की कलमें तथा मनीप्लांट इसी तरीके से पनपाए जाते हैं।

7.4.6 बाग की जमीन

जिस जमीन में मिट्टी के साथ रेत मिली रहती है, उसे दोमट जमीन कहते हैं। बाग लगाने के लिए दोमट जमीन अच्छी मानी जाती है।

मिट्टी की बनावट पर भी बाग के फूल-पौधे तथा साग-सब्जियों की उपज निर्भर करती है। दोमट जमीन में हवा-पानी का निकास अच्छा होता है। इसमें पानी को सोखने और नमी को रोकने की शक्ति अधिक होती है। ऐसी भूमि में फूल तथा सब्जियाँ अच्छी लगती हैं। हल्की दोमट जमीन, जिसमें रेत का अंश अधिक होता है, अच्छी समझी जाती है। साग-सब्जी अधिक काली और दलदल भूमि पर अच्छी नहीं उपजती। बंजर भूमि की गहरी खुदाई कर सब्जी उपजाने योग्य बनाया जा सकता है। भूमि से जलनिकास (जल निकलने) का समुचित प्रबंध होना चाहिए। उचित निकास नहीं रहने से पानी ऊपरी भूमि पर जमा रहता है, और जड़ों को सड़ा देता है।

भूमि पर अधिक समय तक वृक्षों की छाया नहीं पड़नी चाहिए। उस पर कम-से कम 6 घंटों तक सूर्य का प्रकाश पड़ना चाहिए।

लॉन / शाद्वल भूमि (Lawns)

लॉन / शाद्वल भूमि फुलवारी की एक सम्पत्ति है। शाद्वल भूमि में हरी घास रखने के लिए ऊपर की मिट्टी फुलकी और उपजाऊ हो। इस पर खाद देकर पानी पटा देने से घास अच्छी निकलती है। इसमें इधर-उधर जाने का आम रास्ता नहीं होना चाहिए। समतल और बराबर घास वाला लॉन ही अच्छा लगता है। घास को बराबर रखने के लिए घास काटने की मशीन (Moving machine) व्यवहार में लायी जाती है। चलाते समय इस मशीन की धार इस तरह रखनी चाहिए कि 75 से० मी० घास जमीन से ऊपर रहे। ग्रीष्म काल में कटी हुई घास को मैदान में छोड़ देना चाहिए। यह घास की जड़ को गर्मी से बचाती है। हाथ से चलाने वाली मशीन जिसके बीच में गोल बेलन होता है, बेलन पर लगे चाकू पर ही घास की कटाई निर्भर करती है। अधिक चाकू वाला बेलन ज्यादा अच्छा होता है।

इन्हें भी जानें - अधिक वजन का बेलन रहने से श्रम अधिक लगता है और दबाव से घास दब जाती है।

Mover (मूवर) से कटी हुई घास इकट्ठी हो जाती है। विद्युत द्वारा संचालित होने वाला मूवर लॉन के लिए उपयुक्त होता।

मैदान में घास की कटाई की अधिक आवश्यकता बरसात में होती है। मैदान में जहाँ पर घास नहीं हो, वहाँ पर जड़ सहित घास बरसात में लगा देने से घास पुनः जीवित हो जाती है। अन्य ऋतुओं में मैदान को साफ सुथरा रखना चाहिए।

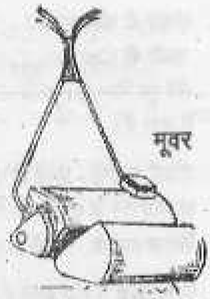
मूवर

घेरा (Hedge)

बागवानी में घेरा एक पर्दे का काम करता है, जिससे कुछ गोपनीयता बनी रहती है। घेरेवाला पौधा कम-से-कम डेढ़ मीटर से 2 मीटर ऊँचा होना चाहिए। ऐसा घेरा अपने अगल-बगल के स्थान को अधिक घेर लेता है। अधिक ऊँचे घेरे के नजदीक वाले पौधे अधिक नहीं ऊपज पाते हैं, क्योंकि उन पर घेरे की छाया पड़ती है। अतः घेरे की बगल में 75 से० मी० स्थान खाली छोड़ कर ही अन्य पौधों को लगाना चाहिए। घेरा देने के लिए कुछ ऐसे भी पौधे मिलते हैं, जिनमें फूल भी लगते हैं। फूल मिश्रित पौधा देने से घेरे की खूबसूरती अधिक बढ़ जाती है। घेरे के पौधों को समय-समय पर बराबर रूप में बड़ी कैंची से छाँट देना चाहिए।

अधोलता (Climber or Creeper) / चढ़नेवाली लताएँ

चढ़नेवाले पौधों को लगाने के विभिन्न तरीके हैं। कुछ को पर्दे के रूप में, कुछ को पाये में लपेटने के रूप में, कुछ पेड़ पर तथा कुछ मुंडेरे (Pergola) पर चढ़ाए जाते हैं। उचित विकास तथा फैलने के लिए लत्तर को उचित अवलंब (सहारा देने) की आवश्यकता पड़ती ये लताएँ सजावटी होने के साथ-साथ फूल भी देते हैं। चढ़नेवाली लताएँ पर्दे के रूप में जाली पर चढ़ायी जाती हैं।

निम्नलिखित लताएँ पर्दों के रूप मे चढ़ायी जाती हैं - जाली पर चढ़ने वाली लताएँ

क. पैसन फ्लावर (Passion flower) इस लता का अधिक प्रचलन है। इसमें नीले फूल लगते हैं।

ख. बी. बेनसुसता (B. vensustya) इसे छत, पेड़ और जाल आदि पर चढ़ाया जा सकता है। इसमें जनवरी-फरवरी में नारंगी रंग के फूल लगते हैं।

ग. बिगमोनिया (Bignonia) इसमें पीले फूल लगते हैं। वर्ष में यह कई बार फूलती है। इसका प्रसार बीज या कलम से होता है।

पेड़ तथा मजबूत मंडप पर चढ़ने वाली लताएँ

क. बाउगेनविलिया (Bougainvillea) - यह मंडप पर चढ़ायी जाती है।

ख. थुनबरजिया ग्रेंडीफ्लोरा (Thunbergia Grandiflora) इसमें सुगन्धयुक्त गुलाबी फूल लगते हैं, जो गुच्छे के रूप में ग्रीष्मकाल में खिलते रहते हैं। यह पेड़ पर अधिक तेजी से चढ़ती हैं और इसका प्रसारण कलम काट कर होता है।

ग. एलामांडा एउब्लेटी (Allumanda Aubleti) यह लता पेड़ पर बहुत तेजी से चढ़ती है और इसका प्रसारण कलम काट कर होता है।

घ. क्वेसक्वुलिस इंडिका (Quisqualis Indica) - इसमें सुगन्धयुक्त गुलाबी फूल लगते हैं, जो गुच्छे के रूप में ग्रीष्मकाल में खिलते रहते हैं। यह पेड़ पर अधिक तेजी से चढ़ती है और इसका प्रसारण कलम काट कर होता है।

मेहराब पर चढ़ने वाली अधीलताएँ

क. जयमीनम रेक्स (Jasminum rex) इसकी लता अधिक फैलती हैं। इसमें उजले फूल ग्रीष्मकाल में लगते हैं। इसका कलम काट कर प्रसारण होता है।

ख. एलामांडा (Allamanda) इसमें पीले रंग के बड़े-बड़े फूल खिलते हैं। मेहराब तथा मंडल पर चढ़ने पर इसकी खूबसूरती बढ़ जाती है।

ग. होनी सकल (Honey Suckle) इसके फूल में मंद-मंद सुगन्ध होती है। इसका प्रसारण कलम से होता है।

घ. एंटीगोनोन (Antigonon) इसमें गुलाबी फूल लगते हैं।

ड. टिकोमा (Tecoma) इसमें ग्रीष्म काल में फूल लगते हैं।

झाड़ी

झाड़ी रहने से फुलवारी की लम्बाई-चौड़ाई अधिक दिखायी देती है। कुछ झाड़ियों में फूल भी लगते हैं। कुछ झाड़ियों के नाम निम्नलिखित हैं जिन्हें नर्सरी से खरीदा जा सकता है।

क. पीचेज (Peaches) वर्षा ऋतु में इसमें चेरी की तरह के फूल खिलते हैं। झाड़ी को ज्यादा बढ़ने देना ठीक नहीं है। इसलिए समय-समय पर इसकी छटाई करते रहना चाहिए।

ख. फोइसनेता (Phoisnetta) यह अधिक उपजाऊ झाड़ी है। इसमें फरवरी से मार्च तक पतझड़ आ जाता है। इसमें उजले फूल खिलते हैं।

ग. विलायती मेंहदी (Docionasa viscosa) यह हमेशा हरी रहती है।

घ. करनजवा (Karanajwa) यह हमेशा हरी रहती है। इसको घेरा देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है।

क्यारियाँ (Beds) क्यारी के लिए जगह की स्थिति ऐसी होनी चाहिए जहाँ पर धूप भली-भाँति हो, पानी समीप हो। ऐसी जगह उत्तम होती है, क्योंकि बिना धूप और पानी के पौधे अच्छी तरह बढ़ नहीं सकते। क्यारियाँ चौकोर, आयताकार, त्रिकोन, गोला या अन्य प्रकार की बनायी जा सकती है। छोटे पौधों के लिए गोल तथा तिकोनी क्यारियाँ उत्तम मानी गई हैं। क्यारी की लम्बाई चौड़ाई बाग की स्थिति एवं उसके क्षेत्रफल पर निर्भर करती है। जिन क्यारियों में फूल लगाए जाते हैं, उनकी मेंड़ पर ईंट भी लगायी जा सकती है। ईंट खड़े, तिकौने या चौरस रूप में लगायी जाती है।

जिस जगह क्यारी बनानी हो, वहाँ थोड़ा सा पानी डाल कर ऊपर की नर्म मिट्टी को थोड़ा सा छील कर चारों ओर एक मुंडेर बनायी जाती है इसके पश्चात् उसमें पानी भर दिया जाता है। पानी अच्छी तरह पृथ्वी पर सूख जाने के बाद जब मिट्टी थोड़ी-सी सूखी जान पड़े, तब उसे कुदाल से अच्छी तरह कोड़ देना चाहिए और जमीन को गछीदार बनाने के लिए ढेलों को फोड़ देना चाहिए ताकि सिंचाई के बाद बहुत दिनों तक उसमें नमी बनी रहे।

क्यारी के ऊपर वर्मी कम्पोस्ट अथवा गोबर की खाद इस भाँति फैलानी चाहिए कि क्यारी के ऊपर पाँच छह से० मी० मोटी तह बन जाए। फिर उसे कुदाल या खुरपी से अच्छी तरह मिला देना चाहिए और मिट्टी को समतल कर देना चाहिए।

इन्हें भी जानें - सब्जी वाली क्यारियों की मेड़ों के किनारे शोभा और सुन्दरता के लिए छोटे-छोटे पौधों वाले फूल भी लगाए जा सकते हैं।

किनारी (Border)

क्यारियों की मेड़ों पर किनारी बनायी जाती हैं तथा उन पर सजावटी छोटे-छोटे पौधे लगाए जाते हैं। किनारी की डिजाइन में सादगी होनी चाहिए। अधिक मोड़ वाली किनारी को ठीक रखने में श्रम अधिक लगता है। अधिक फैलने वाले छाँटने में समय अधिक लगता है।

7.4.7 पात्र में बागवानी (Pot Gardening)

फूल के पौधे सजावटी पौधे तथा लता एवं सब्जियाँ प्रायः शहरों में गमले, बड़े टीन के डिब्बे, हंडियों और काठ के बक्सों आदि में लगायी जाती है।

गमले का चुनाव सबसे पहले करना चाहिए। गमले पौधे के अनुसार छोटे तथा बड़े होने चाहिए। व्यवहार में लाने के पूर्व गमले को अच्छी तरह साफ कर, इसके नीचे के छेद को ढक देना चाहिए, ताकि मिट्टी नीचे नहीं गिरे तथा पौधे अपना भोजन मिट्टी से सुगमता से खींच सकें। गमले में देने वाली मिट्टी खूब महीन कर लेनी चाहिए। उसमें कंकर-पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े नहीं रहने पायें। गमले में भरने वाली मिट्टी में तीन भाग मिट्टी और एक भाग खाद होनी चाहिए। मिट्टी में थोड़ा पीसा हुआ कोयला मिला देने से गमले में पानी चारों फैलता है। गमले में मिट्टी चारों ओर एक समान भरनी चाहिए। मिट्टी भरते समय गमले में पानी नहीं डालना चाहिए और मिट्टी को हल्के हाथ से दबा-दबा कर गमले में भर देना चाहिए।

इन्हें भी जानें - लटकने वाले गमलों में अधोलताएँ लगायी जाती हैं जिन्हें बरामदे में लटका कर घर की शोभा बढ़ायी जाती है।

घर के भीतर वाले पौधे (Indoor Plants)

घर के भीतर वैसे ही पौधों को लगाया जाता है जो अधिक कोमल होते हैं तथा उनमें बाहर की गर्मी और धूप सहने की शक्ति कम होती है। ज्यादातर मनीप्लांट (Money Plant) बरामदे कॉरनर, दीवार आदि पर चढ़ाये जाते हैं। ऐसे पौधे गमले, हंडियों, बोतलों और शीशे के जार आदि में लगाए जाते हैं। अधोलता वाले पौधों को सहारा देने के लिए जाली या रस्सी प्रयुक्त की जाती है। ग्रीष्म ऋतु में ऐसे पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता पड़ती है।

7.4.8 खाद (Manure)

खाद वह पदार्थ है, जो मिट्टी में घुलकर पौधों का भोजन बन जाती है और जिसे पौधे अपनी जड़ों द्वारा खींचते हैं। पौधों को उचित भोजन दो प्रकर से मिलता है एक जड़ से और दूसरे, हवा से। अगर पौधों को उचित भोजन न मिले, तो वे अधिक पुष्ट नहीं होते और अधिक फलते-फूलते भी नहीं। खाद के अभाव में जमीन की उपजाऊ शक्ति भी कम होती जाती है। इस शक्ति को बनाए रखने के लिए बराबर खाद देते रहना आवश्यक है। जमीन में पौधों के लिए भोज्य पदार्थ वर्त्तमान रहता है, लेकिन पौधे लगाने से वह पदार्थ कम होता जाता है और अन्त में जमीन बागवानी योग्य नहीं रह पाती। अतः मूल पदार्थ की कमी को पूरा करने के लिए खाद प्रयुक्त की जाती है।

खाद तीन प्रकार की होती है -

क. पोटास देने वाली खाद - जैसे राख और सल्फेट आफ पोटास।

ख. नेत्रजल देने वाली खाद - जैसे गोबर, घोड़े, बकरी और भेड़ के मल-मूत्र, सड़े पत्तों की खाद, हरी खाद, खली, मल-मूत्र, नाइट्रेट ऑफ सोडा अमोनियम सल्फेट, यूरिया, अमोनिया, नाइट्रेट आदि।

ग. फॉसफोरस देने वाली खाद - जैसे हड्डी, कैलशियम, सुपर फॉसफेट और मछली की खाद आदि।

इन्हें भी जानें - नेत्रजल, फॉसफोरस और पोटास तीनों ढंग की खादों को बराबर-मात्रा में मिलाकर खाद तैयार करनी चाहिए। खाद देने के पश्चात् पानी देना आवश्यक हो जाता है।

7.4.9 सजावटी पौधे (Ornamental plants)

जिन घरों के पास पर्याप्त स्थान हो वे घर के चारों ओर इन पौधों को लगा सकते हैं। घर के किनारों पर मध्य आकार के पौधे तथा सामने की ओर छोटी झाड़ियाँ और पीछे की तरफ फलों के पौधे लगायें। मध्य आकार के या छोटे घर होने पर सजावटी पौधों को चार दीवारों के साथ लगाना चाहिए। घर के बाहर सजावट वाली झाड़ियाँ लगाने का प्रचलन है।

सजावटी पौधे बहुत नाजुक होते हैं, उन्हें मानवीय देख-भाल की अत्यन्त आवश्यकता होती है। इनके लिए प्रकाश, वायु, पानी, मिट्टी के खाद के द्वारा भोजन चाहिए तभी उचित विकास होता है।

गंध युक्त फूल

प्रायः बाग में बेला, चमेली, चम्पा, गुलाब और रातरानी अधिक प्रचलित है।

1. बेला

यह गर्मियों में खिलता है। इसका फूल उजला होता है। इसकी तीन किस्में होती है -

क. रैय : यह सबसे बड़ा होता है।

ख. मोतिया : इसका फूल बड़ा होता है, इसमें काफी गंध होती है।

ग. मोदुरिया : इसका फूल मोतिया से कुछ अधिक बड़ा होता है।

2. चमेली

इसका फूल छोटा-छोटा होता है। इसमें गंध अधिक होती है। यह मई से अगस्त तक खिलता है।

क. स्वर्ण चमेली : इसका फूल सुनहरा-पीला होता है।

3. चम्पा

क. रामधन चम्पा : इसका फूल चमकीला पीला होता है।

ख. नागेश्वर चम्पा : इसका फूल सफेद होता है, परन्तु पराग वाला भाग पीला होता है। इसमें गंध अधिक होती है।

ग. स्वर्ण चम्पा : इसका फूल सुनहरा पीलापन लिए होता है और इसमें बहुत तेज गंध होती है।

घ. दुलाल चम्पा : इसका फूल सफेद, गंधयुक्त होता है।

4. गुलाब

गुलाब बराबर खिलता रहता है। परन्तु फरवरी-मार्च में यह अधिक खिलता है। लतरवाले गुलाब की शाखाएँ अधिक ऊँची चली जाती है।

5. रातरानी

इसका फूल बहुत ही छोटा-छोटा होता है। गर्मियों में यह अधिक खिलता है। इसकी गंध काफी दूर तक फैलती है।

अन्य फूलों के पौधे

क. गेंदा

ख. गुले बांस

ग. गुले आफताब

घ. जीनिया

ङ. बिनका

च. सूर्यमुखी

छ. अमरनथस

ज. केलिमायस

झ. कास्मॉस

ञ. गैलारडा

7.4.10 मौसमानुकूल बागवानी का कार्यक्रम / महीनों के अनुसार बागवानी का कार्यक्रमः

1. **जनवरी :** गुलाब के पुष्ट पौधों की मोटी डालों में चश्मा बाँध कर नए पौधे उगाने का यही समय होता है।

   आवश्यकतानुसार अन्य फूलों के पौधों की सिंचाई होनी चाहिए। ग्रीष्म ऋतु में उपजनेवाली सब्जी, नेनुआ, कुम्हड़ा, भिंडी, करैला और लौकी आदि को इसी तरह लगाते हैं।

2. **फरवरी :** गेंदा और मौसमी फूलों के पौधे रंग बिरंग के फूलों के भार से लद जाते हैं। जो फूल परिपक्व हो गए हो, उन्हें बीज के लिए तोड़ कर झाड़ लें। बीज को धूप में सुखाकर आगामी वर्ष के लिए रख लें। ग्रीष्म ऋतु वाली सब्जियों को इसी माह में सींच डालें।

3. **मार्च :** जाड़े में फूलने वाले फूल इस समय सूखने लगते हैं। इन्हें सींच देने से कुछ दिन और फूल मिल सकते हैं। पालक साग, लाल साग और पुदीना बोने का यही समय होता है। ग्रीष्म ऋतु वाली साग-सब्जी सींचते हैं।

4. **अप्रैल :** जाड़े के फूल इस समय तक समाप्त हो जाते हैं। बेला, गुलाब, रजनीगंधा आदि के पौधों की सिंचाई करें। बेला इस समय काफी खिलने लगता है। इस समय तक नेनुआ, भिंडी और लौकी खूब फलने लगते हैं। जिन क्यारियों में साग-सब्जी लगा

हो उनकी सिंचाई करते जाएँ। लतावाली सब्जियों की क्यारियों को खुरपी से कोड़ दें। बरसात में फलनेवाली सब्जियाँ जैसे नेनुआ, साग, करैला और भिंडी आदि के बीज लगाने का यही समय होता है।

5. **मई :** इस समय फुलवारी में बेला के फूलों की बहार रहती है। बरसाती फूलों के पौधों के लगाने के लिए क्यारियों को कोड़ और सींच कर तैयार रखें।

6. **जून :** इस माह में अंगूर लताओं में फलों के गुच्छे दिखायी पड़ने लगते हैं। इनकी जड़ों में चाय की पत्तियों की सीट्ठी डाल देने से फल रसे से भर जाते हैं। बरसात में फूल देने वाले चीरा - मीरा, दुपहरिया, लबंगलता और अपराजिता आदि फूलों के पौधों और लतियों को लगाने का यह उपयुक्त समय होता है।

7. **जुलाई :** इस माह में गेंदा, गुलमेंहदी एवं कास्मॉस आदि के फूलों की बिचड़ी डाल दें। बेला, रजनीगंधा, और बरगद आदि के झाड़ को छाँट दें। इस माह में जूही फूलों से भर जाती है और सारी फुलवारी सुगंध से भर जाती है।

   खीरा, झिंगुनी, नेनुआ, कुम्हड़ा आदि की लताएँ जमीन पर फैलने ने दें। इनमें झाड़ बाँध कर ऊपर मचान पर चढ़ा दें। कंद जाति के पौधों की जड़ों पर मिट्टी चढ़ा दें।

8. **अगस्त :** इस माह में गेंदा, गुलदाउदी, रजनीगंधा और बेला आदि के पौधे अवश्य लगा देने चाहिए। गुलाब की जड़ में नीम की खल्ली की खाद डालें। चाय की पत्तियों को सीढ़ी को भी गुलाब की जड़ों में डाल दें। इससे पौधे पुष्ट और फूल बड़े होंगे। बैगन और टमाटर की बिचड़ी इस माह में लगा दें। मूली, शलजम, गाजर और साग बोने का भी यही समय है। इस माह में बंधागोभी, गाँठगोभी तथा सलाद की बिचरी अवश्य ही डाल दें।

9. **सितंबर :** टमाटर, बैगन आदि के पौधों की खुरपी से हल्की कोड़ायी कर दें और घास-पात निकाल दें। इस समय में झिंगुनी, नेनुआ और भिंडी काफी फलती है।

10. **अक्टूबर :** जिन गुलाब के पौधों में डालियाँ घनी हो उनकी छटाई कर दें, जड़ों से मिट्टी हटा कर एक-दो दिनों के लिए खुला छोड़ दें। इसके बाद चाय की पत्तियों की सीठी या मछलियों के चोईटे जड़ में डाल दें और मिट्टी से ढक दें। बेला, जूही, और चमेली आदि सुगंधित फूलों के पौधों की छटाई कर दे और अगर नए पौधे लगाने हों तो पुराने पौधों में चश्में बाँध दें।

11. **नवम्बर :** टमाटर, पालक, गोभी और प्याज के बिचड़ों को क्यारियों में लगाने का यही आखिरी समय होता है। जाड़े में होने वाली साग-सब्जियों को बोने का यही सही समय है।

12. **दिसंबर :** फूलों के पौधे में खाद देने का यह उत्तम समय है। इस समय तक गेंदा खिलने लगता है। मूली, शलजम, चुकंदर, गाजर और साग आदि इस माह में भी लगाये जा सकते हैं।

7.4.11 बौंसाई (Bonsai technique)

बागवानी करने के बौंसाई तकनीक का उद्भव एवं विकास जापान में हुआ था। इस तकनीक का प्रथम प्रदर्शन 1909 में लंदन में किया गया था।

इस कला में बड़े पौधे को बौना बना दिया जाता है जिसमें बड़े पौधे के सभी गुण विद्यमान रहते हैं। केवल आकार छोटा कर दिया जाता है। इन पौधों के लिए पर्याप्त जमीन की आवश्यकता नहीं होती, गमले में पौधा लगाया जा सकता है तथा फल और सब्जी प्राप्त की जा सकती है। घर को हरा-भरा बनाया जा सकता एवं प्राकृतिक छटा का सुखद अनुभव किया जा सकता है। वह

बागवानी और कला का संगम है जहाँ सामान्य पौधे जीवित कला के छोटे रूप में रूपान्तरित किये जाते हैं।

वर्तमान काल में बागवानी का शौक रखने वालों के बीच बौंसाई कला अत्यधिक प्रचलित हुई है तथा इसे अब आधुनिक अंत-सज्जा का एक अभिन्न अंग माना जाता है। इस तकनीक की सहायता से बड़े वृक्षों जैसे - आम, कटहल, लीची, यहां तक कि बरगद, पीपल तथा अमलतास आदि जैसे वृक्षों को उनके लघु स्वरूपों (Min form) में गमलों, फुलवारी या रसोईघर-बाग में लगाया जा सकता है। इन वृक्षों के लघु रूप में मूल वृक्षों (Original trees) के सभी गुणों का समावेश रहता है। मूल वृक्षों की तरह ही इनके छोटे या बौने या बोनसाई स्वरूपों वाले वृक्षों में भी फूल-फल लगते हैं।

इन्हें भी जानें - गुलाब, गुलदाउदी, डहेलिया की बौंसाई की ऊँचाई को फास्फोन डी, साइकोसील या सी० सी० सी० एवं बी० 9 जैसे रसायनों के लगातार छिड़काव द्वारा नियंत्रित करके छोटा बनाया जा सकता है।

बौंसाई बनाने की विधियाँ
- बीज द्वारा बौंसाई बनाना
- कलम द्वारा बौंसाई बनाना
- चश्मा चढ़ाकर बौंसाई बनाना
- गूटी बाँधकर बौंसाई तैयार करना

1. **बीज द्वारा बौंसाई बनाना :** इस विधि में बीज को अनुकूल समय में नर्सरी में बोकर पौधा तैयार कर लिया जाता है। जब पौधा एक से डेढ़ फुट लम्बा हो जाता है तो पौधे को उखाड़कर बौंसाई के गमले में लगा दिया जाता है। यदि बीज का आवरण कठोर होता है तो अंकुरण के लिए बीज पर हल्की हल्की चोट मार कर भुरभुरा कर दिया जाता है या बीज को थोड़ी देर तक तेजाब में भिगो देते हैं।

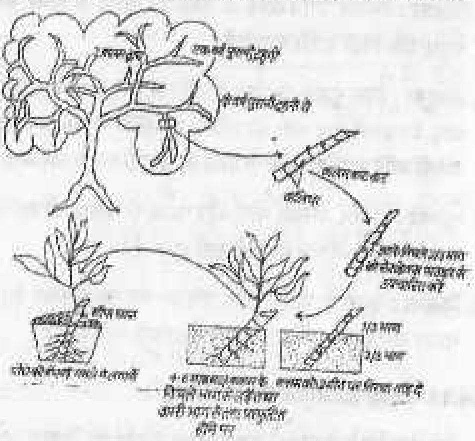

2. **कलम द्वारा बौंसाई बनाना :** बहुवर्षी पौधों की बौंसाई कलम द्वारा तैयार की जाती है। वसंत या वर्षा ऋतु में पेड़ों की दो या तीन वर्ष पुरानी टहनियों से 10-15 से० मी० लम्बी कलम काट लेते हैं। पहचान के लिए कलम के नीचे का हिस्सा सीधा तथा ऊपर का भाग तिरछा काटा जाता है। नीचे के 2/3 भाग में सैराडेक्स -3 पाउडर लगा दें जिससे जड़े शीघ्र और आसानी से निकल आती हैं। कलम को नर्सरी में लगाते समय ध्यान रखें कि कलम का 2/3 भाग जमीन के अन्दर तथा 1/3 भाग बाहर रहे। पौधा होने पर 3-4 माह के बाद बौंसाई गमले में लगाया जाता है।

3 **चश्मा चढ़ाकर बौंसाई बनाना :** चश्मा चढ़ाने के लिए एक या दो वर्ष के पौधे की टहनी पर दूसरे पेड़ की कलिका लगाते हैं। इसके लिए पौधे के टहनी में अंग्रेजी के अक्षर 'T' के आकार में चाकू से काट देते हैं, काटते समय ध्यान रहे कि संवहन तंत्र (Vascular system) क्षतिग्रस्त न होने पाये। इस 'T' पर दूसरे पौधे की निकाली कलिका फँसा कर पाली धन या कपड़े से कस कर बाँध दिया जाता है। जिससे कलिका सूखने तथा गिरने न पाये। कलिका से एक - डेढ़ फुट लम्बी शाखा बन जाने पर मातृ पौधों को कलिका के थोड़ा ऊपर से काटा कर बौंसाई गमले में लगा दिया जाता है।

4 **गूटी बाँधकर बौंसाई तैयार करना :** गूटी बाँधकर के स्थान के आसपास 10 से० मी० तक की पत्तियाँ हटाकर 3 से० मी० छिलका गोलाई में उत्तार लेते है कि संवहन तंत्र को हानि न पहुँच पाये। छिले स्थान पर सेरोडेक्स-3 पाउडर मिलाकर और उसे भीगी घास और पॉलीथिन से ढककर दोनों सिरों पर कस कर बाँध दिया जाता है। जब इन गूटियों में जड़े निकलने लगती हैं तो गूटी के नीचे टहनीकाट कर बौंसाई गमले में लगा दिया जाता है। वर्षा ऋतु आरम्भ होने के 15 दिन पूर्व गूटी बाँधने का समय सबसे उत्तम होता है।

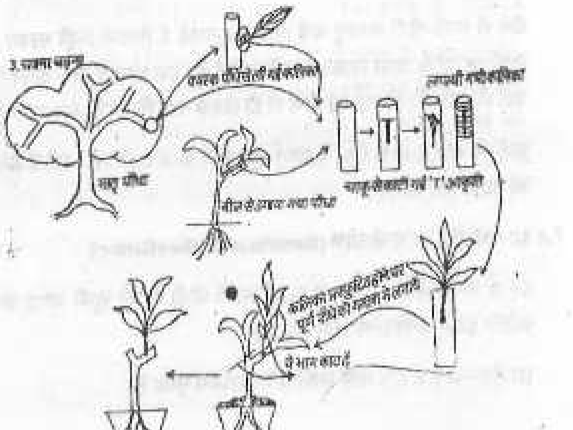

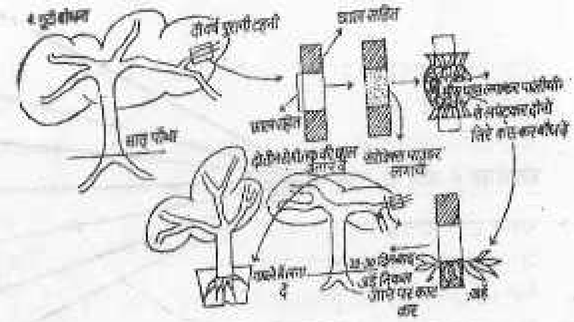

बौंसाई गमले :

बौंसाई पौधे का आकार छोटा हो इसके लिए उसे पर्याप्त मात्रा में आवश्यक पोषक तत्व नहीं दिये जाते हैं। पौधे को बौना रखने एवं उसकी वृद्धि को रोकने के लिए एक विशेष प्रकार के गमले बनाये जाते हैं।

बौंसाई लगाने का गमला सीमेन्ट या मिट्टी का बनाया जाता है। इसका आकार कोणीय, चौरस या गोल होता है। इसकी ऊँचाई 10 से० मी० तथा घेरा 20 से० मी० से अधिक नहीं होना चाहिए।

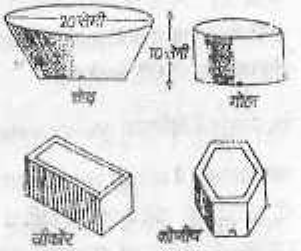

गमले की गहराई कम होने से पौधे की वृद्धि के लिए पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता है और वह बौनी अवस्था में ही जीवित रहता है। पौधे की अति आवश्यक न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु गमले की रचना विशेष प्रकार से की जाती है। सबसे नीचे 1/2 भाग में खाद एवं मिट्टी तथा तीसरी 1/3 सतह में बौंसाई को जमीन से मिट्टी सहित उखाड़ कर लगा देते हैं और सतह को चिकनी मिट्टी से भर देते हैं। उखाड़ते समय जड़ों के पास हटा दिया जाता है। थोड़ी सी मिट्टी लगी रहने देते हैं ताकि पौधा सूखने न पाये।

गमले में मिट्टी की व्यवस्था

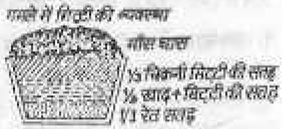

पौधे से मोटी-मोटी फालतू जड़ें काट कर गमले में चिकनी मिट्टी भरकर पौधे को सीधा खड़ा कर देते हैं। गमले में सबसे ऊपर सतह पर 'मौस' घास लगाकर पानी डालते हैं। इस घास में पानी सोखने की शक्ति अधिक होती है और पौधे को पानी की कमी नहीं हो पाती है। बॉनसाई को पानी से ही पोषक तत्व मिलते हैं, अतः पानी देते रहना चाहिए।

इन्हें भी जानें – जिन पौधों में पहले फूल आने के बाद पत्तियाँ आती हैं उनमें मिट्टी तथा खाद फूल आने के बाद तथा पत्तियों आने को पहले देना चाहिए।

7.4.12 रसोईगृह-बाग से लाभ (Benefits of Kitchen Garden)

घर के अगल-बगल, पिछवाड़े या आँगन में थोड़ी सी भी खुली जगह उपलब्ध हो तो उसमें रसोईघर-बाग लगाना उपयुक्त है क्योंकि इससे अनेकानेक लाभ होते हैं।

रसोईघर-बाग से होने वाले लाभों में निम्नांकिन मुख्य हैं –

रसोईघर - बाग से लाभ

- घर के पर्यावरण में हरीतिमा -तत्व में वृद्धि करना
- आहार में विविधता,
- अवकाश के समय का सदुपयोग
- स्वास्थ्य एवं स्वाद
- मनोरंजन का साधन
- प्रकृति से जुड़े रहने का अहसास
- बोंसाई तकनीक का उपयोग

क. घर के पर्यावरण में हरीतिमा- तत्व मे वृद्धि करना (Adding to the element of greenness in home environment)

रसोईघर - बाग में लगे शाक - सब्जियों के पौधे लताएँ, नींबू, पपीता, केला, तथा अमरूद आदि के वृक्ष घर के पर्यावरण में हरीतिमा तत्व की वृद्धि करते हैं।

ख. आहार में विविधता (Variety in diet)

रसोईघर-बाग में लगे हुए सलाद, सोआ-मेथी, धनिया, लहसून, मूली, गाजर, टमाटर, हरी मिर्च तथा अन्य शाक - सब्जियाँ आदि की सहायता से गृहिणी तत्क्षण विभिन्न प्रकार के सलाद तथा व्यंजन प्रस्तुत कर परिवार के लिए किये जाने वाले आहार - आयोजन में आकर्षण एवं स्वास्थ्यप्रद विविधता ला सकती है।

ग. अवकाश के समय का सदुपयोग (Good use of leisure time)

अपने अवकाश के समय में परिवार के सदस्य रसोईघर - बाग में काम कर उससे विभिन्न लाभ, यहाँ तक कि परिवार की आवश्यकता से अधिक शाक-सब्जियाँ पैदाकर आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं।

घ. स्वास्थ्य एवं स्वाद (Health and Taste)

रसोईघर-बाग से प्राप्त शाक - सब्जियाँ अधिक स्वास्थ्यप्रद एवं सुस्वादु होती है। गृहिणी अपने रसोईघर-बाग से शाक-सब्जियाँ तुरंत हरी एवं ताजी अवस्था में प्राप्त कर लेती हैं। इन शाक-सब्जियों के पोषण-मान (Untritive value) में कमी नहीं आती है तथा उनका मूल प्राकृतिक स्वाद भी ज्यों का त्यों बना रहता है।

ङ. मनोरंजन का साधन (Means of Entertainment)

रसोईघर-बाग परिवार के विभिन्न सदस्यों विशेष रूप से अवकाश-प्राप्त वृद्ध सदस्यों तथा किशोर वर्ग के सदस्यों, के लिए मनोरंजन का उत्तम स्त्रोत हो सकता है। स्वयं लगाये गए पौधों, पत्तियों तथा वृक्षों को बढ़ते, फूलते तथा फलते हुए देखने मात्र से ही एक नैसर्गिक सुख - रचनाकार होने का सुख, की अनुभूति होती है।

च. प्रकृति से जुड़े रहने का अहसास (Feeling of Being Attached to Nature)

आज की भौतिकवादी दुनिया (Materialistic world) में मनुष्य प्रकृति से दूर से दूरतर होता जा रहा है। आज के मनुष्य का जीवन अधिकाधिक यंत्रवत (Machanised) होता जा रहा है। ऐसे समय में रसोईघर-बाग में बैठकर अथवा उसमें काम कर बीजों को पौधों में बदलते हुए तथा उन्हें फूलते-फलते देखकर मनुष्य अपने से जुड़े होने तथा उनके माध्यम से प्रकृति से जुड़े होने का आनन्द प्राप्त करता है।

छ. बौंसाई तकनीक का उपयोग (Use of Bonsai Technique)

गृहिणियाँ अपने रसोईघर-बाग में बौंसाई शैली से आम, अमरूद, लीची तथा कटहल आदि के वृक्ष लगाकर न केवल अपने घर की अंतः सज्जा में चार चाँद लगा सकती हैं अपने अवकाश के क्षणों में बौंसाई पौधे तैयार कर इनके माध्यम से अपने पारिवारिक आय को अनुपूर्ति (Supplement) भी कर सकती हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि रसोईघर बाग से अनेकानेक लाभ होते हैं। इन लाभों को प्राप्त करने के लिए रसोईघर-बाग लगाना काफी महत्वपूर्ण है।

अभ्यास

1. खाली स्थान को भरें।

1. परिवार की आय का सबसे अधिक भाग ------------------ पर खर्च होता है।
2. ------------------ भविष्य के लिए बचत बहुत आवश्यक है।
3. आपातकालीन ------------------ आकस्मिक होती है।
4. परिवार के आय-व्यय के मासिक या वार्षिक लेखा-जोखा को पारिवारिक ------------------ कहते हैं।
5. जिस बजट में अनुमानित आय प्रस्तावित व्यय से कम रहती है, उसे ------------------ का बजट कहते हैं।
6. जिस बजट में अनुमानित आय प्रस्तावित व्यय से अधिक रहती है, उसे ------------------ का बजट कहते हैं।
7. बजट फ्रांसीसी शब्द '------------------' से बना है।
8. बजट जीवन की ------------------ निर्धारित करने में भी सहायता करता है।
9. खाद्य पदार्थों को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने के लिए ------------------ का प्रयोग किया जाता है।
10. प्रेशर कुकर में खाना बनाने से समय और ------------------ की बचत होती है।
11. टोस्टर एक छोटा सा ------------------ उपकरण है।
12. ------------------ कालीन, दरियाँ तथा फर्श स्वच्छ करने के काम में आता है।
13. प्रेशर कुकर में ------------------ नहीं पकड़ता है।
14. ------------------ को सप्ताह में एक बार अवश्य साफ करना चाहिए।
15. साग-सब्जी तथा ------------------ के छोटे-छोटे बीज नर्सरी में मिलते हैं।
16. गृह-वाटिका में विभिन्न ------------------ एवं औजारों का प्रयोग करने से सुविधा होती है।
17. रसोईगृह-उद्यान से परिवार को ------------------ लाभ प्राप्त होता है।

2. सही और गलत बताइये :-

1. व्यय से अधिक आय होने पर ही बचत होती है।
2. बचत आपातकाल में आर्थिक सुरक्षा प्रदान नहीं करती है।
3. समय के साथ परिवार की आवश्यकताएँ परिवर्तित नहीं होती।
4. पारिवारिक बजट को, पारिवारिक आय प्रभावित करती है।
5. बच्चों की शिक्षा, विवाह और बीमारी के लिए बचत करना आवश्यक नहीं है।

6. प्रत्येक परिवार का बजट उसकी आय एवं आवश्यकताओं के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है।

7. भोजन यह बजट की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मद है।

8. बजट जीवन की प्राथमिकताएँ निर्धारित करने में भी सहायता करता है।

9. वैक्यूम क्लीनर का इस्तेमाल कपड़ों को साफ करने के लिए किया जाता है।

10. समय और शक्ति के बचत से कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

11. प्रेशर कुकर में खाना बनाने से समय और शक्ति की बचत नहीं होती है।

12. कपड़े धोने की मशीन में सभी प्रकार के सूत से बने हुए वस्त्र धोए जा सकते हैं।

13. बिजली की इस्त्री में तापनियंत्रण की व्यवस्था रहती है।

14. मई में कोई फसल नहीं लगायी जाती है।

15. बागवानी करने के बौंसाई तकनीक का उद्भव एवं विकास जापान में हुआ था।

3. आइए विचार करें।

1. बचत हम उस धनराशि को कहते हैं?

(क) बढ़ी हुई धनराशि के रूप में प्राप्त हों। (ख) धन को व्यय करें।

(ग) पारिवारिक बजट में किया गया बचत (घ) विलासिता

2- बचत आय तथा व्यय के मध्य

(क) सन्तुलन कार्य हैं। (ख) जीवन-चक्र

(ग) धन व्यय (घ) प्रकार

3. नौकरी पेशेवाले की आय कैसी होती है।

(क) निश्चित (ख) अनियमित

(ग) अनिश्चित (घ) साधारण

4. विशेष अवधि में होनेवाले पारिवारिक आय व्यय के विवरण को क्या कहते हैं?

(क) लेखा-जोखा (ख) पारिवारिक बजट

(ग) अंकेक्षण (घ) कुछ भी नहीं

5. बजट बनाते समय निम्न में से किस मद पर अधिक व्यय करते हैं।

(क) आराम-संबंधी वस्तुओं पर (ख) भोजन पर

(ग) विलासिता-संबंधी वस्तु पर (घ) आवास पर

6. बजट बनाते समय उच्च आयवाले किस मद पर अधिक व्यय करते हैं ?
   (क) भोजन पर (ख) आराम-संबंधी वस्तुओं पर
   (ग) आवास पर (घ) विलासिता-संबंधी वस्तुओं पर
7. पारिवारिक बजट कैसा होना चाहिए ?
   (क) घाटे का (ख) संतुलित
   (ग) बचत का (घ) असंतुलित

3. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बचत के अर्थ एवं परिभाषा का स्पष्ट करें।
2. बचत क्या है ? बचत के काई दो महत्व बताएँ।
3. बचत करना क्यों आवश्यक है ? बचत के कोई तीन लाभ बताएँ।
4. बचत की परिभाषा दीजिए।
5. अनिवार्य बचत क्या है ? संक्षेप में लिखें।
6. गृहिणी अपने बजट से बचत किए गए धन का सदुपयोग किस प्रकार करेगी ? किन्हीं दो साधनों के नाम लिखें।
7. बजट के अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन करें।
8. घरेलू बजट में गृहिणी किस-किस मुख्य मद पर खर्च करेगी ?
9. प्रेशर कुकर पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
10. एक अच्छी गृहिणी अपने श्रम की बचत किस प्रकार करेगी ?
11. रसोईघर के लिए उपकरणों में किन्हीं दो के नाम तथा उपयोग लिखें।
12. रसोईगृह-उद्यान से क्या लाभ है ? संक्षेप में लिखें।
13. रसोईगृह-उद्यान में खाद का प्रयोग आप कैसे करेंगे ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बचत के प्रकार क्या हैं ? संक्षेप में लिखें।
2. बचत को निर्धारित करने वाले तत्त्व क्या हैं ? संक्षप में लिखें।
3. बचत के अर्थ एवं परिभाषा का वर्णन करें।
4. पारिवारिक बजट किसे कहते हैं ? इससे क्या लाभ होता है।
5. बजट कितने प्रकार के होते हैं ? संक्षेप में बताएँ ।

6. पारिवारिक बजट को प्रभावित करने वाले कारक क्या हैं ? संक्षेप में लिखें।

8. रसोईघर से संबद्ध आधुनिक श्रमबचत उपकरणों का प्रयोग क्यों आवश्यक है ? किसी एक उपकरण का वर्णन करें।

9. घरेलू उपकरणों के चयन में क्या-क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए ? वर्णन करें।

10. समय-बचत तथा शक्ति बचत के चार उपकरणों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

11. बौंसाई बनाने की विधियाँ क्या है ? संक्षेप में लिखें।

12. पात्र में बागवानी तैयार करते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए।

13. रसोईगृह-उद्यान में अधोलता / चढ़नेवाली लताएँ का क्या महत्व है ?

5. कथनों का मिलान करें।

(i) विज्ञान की उन्नति के फलस्वरूप	क. गैस-चूल्हा, रेफ्रीजरेटर, प्रेशर कुकर, सिलाई मशीन, विद्युत इस्त्री
(ii) मिक्सर	ख. बिजली, द्वारा संचालित होता है।
(iii) प्रेशर कुकर	ग. कई प्रकार के यन्त्रों का आविष्कार हुआ है।
(iv) वैक्यूम क्लीनर	घ. भोज्य-पदार्थों को आस-पास से वायुमण्डल के ताप से निम्न बिंदु पर ठण्डा करने का कार्य करने वाला उपकरण है।
(v) समय-बचत, शक्ति-बचत के कुछ उपकरण	ङ. विद्युत् मोटर द्वारा चलता है।
(vi) रेफ्रिजरेटर	च. मिश्रधातु से बने होते है।

---

1. बौंसाई बनाने की विधियाँ	क. बहुत नाजुक होते हैं।
2. गंध युक्त फूल	ख. जो मिट्टी में घुलकर पौधों का भोजन बन जाती है।
3. सजावटी पौधे	ग. गूटी बाँधकर बौंसाई तैयार करना
4. खाद	घ. आलू, ओल, शकरकंद
5. नींबू गुलाब	ङ. बेला, चमेली, गुलाब, चम्पा, रातरानी।
6. जड़ों से पौधे उगाना	च. जिनकी डालों में स्थान-स्थान पर गाँठें होती है।

*****

पाठ्यक्रम

गृह विज्ञान - दशम

ईकाई सं		विषय वस्तु	उद्देश्य	संसाधन
1.	गृह विज्ञान	गृह विज्ञान का क्षेत्र, इर क्षेत्र से अलग-अलग रोजगार की संभावनाएँ।	1. गृह विज्ञान के सभी क्षेत्रों को जान सकेंगे। 2. हर क्षेत्र कोई ना कोई रोजगार देता है इसे कैसे प्राप्त करेंगे यह जान सकेंगे। 3. कुटिर उद्योग की जानकारी मिलेगी। 4. बच्चे स्वावलंबी बनेंगे।	1. चार्ट द्वारा 2. चित्र अवलोकन से 3. कोई लघु फिल्म दिखा कर 4. किसी और का उदाहरन देकर
2.	शरीर विज्ञान	1. रक्त संचार के कार्य, अवयव और संरचना 2. श्वसन संस्थान के कार्य अवयव, संरचना। 3. उत्सर्जन संस्थान के अवयव, संरचना और कार्य का परिचय।	उन्हें अपने विभिन्न संस्थानों के बारे में जानकारी मिलेगी और संस्थान कैसे ठीक से कार्य कर सकेंगे यह जानकारी मिलेगी जिससे वे स्वस्थ रह सकेंगे।	1. चार्ट द्वारा 2. श्यामपट द्वारा
3.	स्वास्थ्य विज्ञान	1. सफाई का महत्व एवं सामान्य रोग 2. रोगी के पथ्य (भोजन) देखभाल, बिस्तर बनाना, दवा देने में सावधानियाँ 3. प्राथमिक उपचार - कटना, जलना, बेहोश होना, टूटना	1. हम कैसे साफ करे और उनके लाभ-हानि जानेंगे। 2. कुछ सामान्य रोग, लक्षण, उपचार और देखभाल जानेंगे। 3. रोगी का आहार कैसा हो, बिस्तर कैसे बने, दवा कैसे दें आदि की जानकारी उन्हें मिलेगी। 4. घर या बाहर अचानक घटनेवाली घटनाओं में कैसे प्राथमिक उपचार करे यह जानकारी उन्हें मिलेगी जिससे कि अपना और दूसरों का मदद कर सकेंगे।	1. चार्ट द्वारा 2. वर्ग कार्य करवाकर 3. उदाहरन द्वारा 4. श्यामपट द्वारा
4.	भोजन एवं पोषण	1. कुपोषण - परिभाषा, अर्थ, बचाव के उपाय, कारण 2. भोजन बनाने की विधियाँ 3. भोजन संरक्षण - घर में भोज्य पदार्थों का संरक्षण इसकी साफ सफाई, लाभ-हानि	1. अपने पोषक तत्वों के बारे में जानकर वे कुपोषण से बच सकेंगे। 2. भोजन बनाने के विधि को जानकर वे रोगियों, बच्चों, बुढ़ों आदि को सुपाच्य भोजन दें सकेंगे। 3. हर विधि का लाभ हानि समझ सकेंगे। 4. घर में उपयोग होने वाले खाद्य पदार्थों का उपयुक्त संरक्षण कर सकेंगे।	1. चार्ट द्वारा 2. प्रोजेक्टर द्वारा फिल्म दिखाकर 3. अखबार और अन्य पत्रिकाओं द्वारा

5.	मानव विकास	1. प्रसवोपरांत देखभाल- माँ और नवजात शिशु की देखभाल, साफ सफाई, आहार, वस्त्र, व्यायाम 2. शिशु का आहार- प्राकृतिक कृत्रिम और पूरक आहार 3. टीकाकरण - किस उम्र में कौन-सा टीका पड़ता है। लाभ-हानि, सावधानियाँ	1. प्रसव के बाद माँ और बच्चे के सारी आवश्यकताओं और देखभाल की जानकारी मिलेगी। इससे माता और बाल मृत्यु दर में कमी आएगी। 2. शिशु को कब कैसा आहार देना है एवं इसके लाभ-हानि की जानकारी मिलेगी। 3. किस उम्र में कौन-सा टीका देना है, इसके लाभ, सावधानियाँ आदि की जानकारी मिलेगी।	1. पाठ्यपुस्तक द्वारा 2. टीकाकरण कार्ड द्वारा 3. चार्ट द्वारा 4. फिल्म द्वारा जैसे- पोलियो, हैजा आदि
6.	वस्त्र विज्ञान	1. रेशों का वर्गीकरण - प्रकार, विशेषता, रख-रखाव, उपयोगिता, पहचान 2. विभिन्न प्रकार के वस्त्रों को रख-रखाव। 3. रेडीमेड वस्त्रों का चुनाव, रख-रखाव	1. वस्त्र बनाने के विभिन्न रेशों कि पहचान कर सकेंगे। 2. सभी प्रकार के वस्त्रों को अधिक समय तक सुरक्षित रख सकेंगे। 3. रेडीमेड वस्त्रों को खरीदते समय उनके गुणों के अनुसार उसका चयन कर सकेंगे और उसका रख-रखाव जान सकेंगे।	1. चार्ट द्वारा 2. श्यामपट द्वारा 3. बाजार का सर्वे करवाकर 4. कपड़ों का नमूना दिखाकर
7.	गृह प्रबन्ध	1. बचत - अर्थ, परिभाषा, महत्व, प्रकार, लाभ 2. बजट - अर्थ, परिभाषा, महत्व, प्रकार, लाभ 3. उपकरण - महत्व, प्रकार, श्रम को कम करनेवाले उपकरण, उनका रख-रखाव 4. बागवानी - महत्व, लाभ, प्रकार, देखभाल	1. बच्चों में बचत की आदत का विकास होगा। 2. वे बजट बनाकर खर्च करना सीखेंगे यह आदत उनके भविष्य को सुरक्षित करेगी। 3. घर-बाहर वे श्रम को कम करने वाले उपकरणों का उपयोग जान सकेंगे जिससे कि अपना काफी समय बचा सकेंगे। 4. बागवानी से वे वातावरण को सुन्दर और स्वच्छ बनाते हुए कुछ पैसे भी कमा सकेंगे।	1. श्यामपट 2. चार्ट द्वारा 3. उपकरण का चित्र दिखाकर या उपकरण दिखाकर 4. पौधे लगवाकर

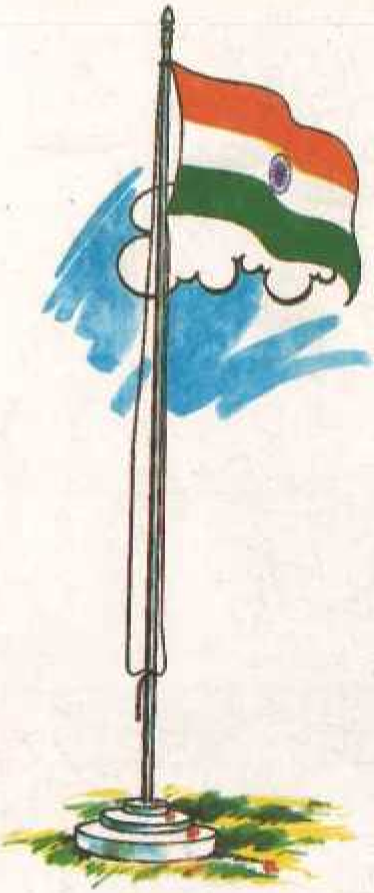

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग।
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना-1
BIHAR STATE TEXT BOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

मुद्रक : बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, शाहगंज, पटना-800 006